

જિન, જાદુ, ઓર બિમારીઆ દૂર કરનેકા ઈલાજ

સઈદ બિન અલી બિન વહફ અલ કહતાની

ઈસ્લામિક ઈન્ફર્મેશન સેન્ટર

હોટલ નુરાની પાસે, ડાંડા બજાર, ભુજ - કચ્છ. મો. : ૮૪૦૧૭ ૮૬૧૭૨

www.iickutch.blogspot.in

मुकद्दमा

कुरआन व हदीष के ऋरीअे एलाज की अहमियत

एस में कोय शक नहीं कि कुरआन करीम के ऋरीअे ओर नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से षाबित दम के ऋरीअे एलाज करना मुझीद एलाज ओर मुकम्मल शिझायाबी हे. (जैसा कि अल्लाह तआला का एर्शाद हे.)

कुल हुप लिल्ललमीन आमन्नू हुदंप व शिझाउन. (हामीम सजदा : ४४)

तरजूमा : आप कह दिञ्जुअे कि यह (कुरआन) तो एर्मानवालौ के लिये हिदायत ओर शिझा हे. (दूसरी जगह एर्शाद हे)

व नुनज़िल्लु भिनल् कुरआनि मा हुप शिझाउंप व रहमतुल् लिल मुअ्भिनीन. (एसराअ : ८२)

तरजूमा : यह कुरआन जे हम नाज़िल कर रहे हें, मोमिनौ के लिये शिझा ओर रहमत हे.

एस आयत में लइळ “भिन्” बयान जिन्स के लिये हे, कयुंकि कुरआने करीम जैसा कि गुळिस्ता आयात में हे पुरा का पूरा शिझा हे. (नीळ एर्शाद हे)

या अय्युहन्नासु कद् जाअत्कुम् मवर्धत्तुम् भिर् रब्बिकुम् व शिझाउल् लिमा क्तिस्सुदूरि व हुदंप व रहमतुल् लिलमुअ्भिनीन. (युनुस : ५७)

तरजूमा : अय लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से अेक ऐसी चीळ आए हे जे नसीहत हे ओर दिलौ में जे रोग हे एनके लिये शिझा हे ओर मोमिनौ के लिये हिदायत ओर रहमत हे.

मतलब ये कि कुरआने करीम तमाम दिल के व जिस्म के अमराळ ओर दुन्या व आभिरत की भिमारीओ के लिये मुकम्मल शिझा हे, अलबत्ता हर शप्स को कुरआन से एलाज व शिझायाबी की तपझीक नहीं मिलती, लेकीन अगर कोय मरीळ कुरआन के ऋरीअे शिझा तलब करे ओर सिद्क व एर्मान, मुकम्मल कबूलियत, पकका ऐअतिकाद ओर शरीअत की पावंटी के साथ कुरआन के ऋरीअे अपने मरळ का एलाज करे तो बीमारी हरगिळ उसका मुकाबला नहीं कर सकती, बीमारीयां झमीन-आस्मान के रब के कलाम का मुकाबला कैसे कर सकती हें? जे कलाम अगर पहाडौ पर नाज़िल होता तो उन्हे दूकणे कर देता, या झमीन पर नाज़िल होता तो उसे काट कर रब देता, लिहाजा दिल या जिस्म की हर बीमारी का कुरआने करीम की समज रजनेवाले के लिये कुरआन के अंदर एलाज का तरीका, बीमारी का सबब ओर उससे बचाव की तदबीर मौजूद हे. अल्लाह तआलाने कुरआने करीम के अंदर दिल ओर जिस्म की बीमारीयौ का ठिक किया हे ओर दिल ओर जिस्म के एलाज का

तरीका ली जाता दिया है.

दिल की बीमारियों की दो किस्में हैं :

(१) शक व शुब्हा की बीमारी (२) ज्वाहिशे नइस ओर गुमराही की बीमारी. अल्लाह सुब्हानहुने अमराऊं कल्ब (दिल की बीमारियों) का तइसील (जुलासे) के साथ ठिक किया है ओर एनके अस्बाब व एलाज ली जाता दिअे है.

अल्लाह तआलाने इरमाया :

अ व लम् यइक्किहिम् अन्ना अन्जल्ना अलय्कल् किताब युत्ला अलय्हिम् एन्न ई आलि-क ल रहमतंप् व ठिक्रा लि क्पुंमिंय् युअ्मिन्न. (अन्कबूत : ५१)

तरजुमा : क्या उन्हें यह काड़ी नहीं की हमने आप पर किताब नाज़िल इरमा दी जो उन पर पढ़ी जा रही है, बेशक इस में रहमत है ओर नसीहत है उन लोगों के लिये जो एमानवाले हैं.

अल्लामा एब्दुल कथियम रहमतुल्लाह अलयहि इरमाते हैं : “पस जिसे कुरआन शिफा न दे सके उसे अल्लाह ली शिफा न दे, ओर जिसे कुरआन काड़ी न हो उसे अल्लाह ली काड़ी न हो.” (आदुलमआद ३पर/४)

रहे जिस्मानी अमराऊ, तो कुरआने करीमने एनके एलाज के उसूल ओर तमाम क्वाएद की तरइ रहनुमाए की है. जिस्मानी बीमारियों के एलाज के तमाम उसूल व क्वाएद कुरआन के अंदर मौजूद हैं ओर यहां दीये गअे तीन उसूलों में बयान है : (१) सेहत की हिफाज़त (२) तकलीफ़ देनेवाली चीज़ों से बचाव. (३) नुकसानदेनेवाली ओर गंदी चीज़ों को निकाल देना.

ओर एसी से बयान की गए बीमारियों की किस्मों के तमाम हिस्सों पर दलील ली जाअेगी. (आदुल मआद ५-४, ३पर/४)

बंदा अगर उमदा तरीके से कुरआने करीम के ऋीअे एलाज करे तो जल्द शिफायाबी में उसकी अजुब व गरीब तापीर देजेगा. एमाम एब्दुल कथियम रहमतुल्लाह अलयहि इरमाते हैं. :

“भकका मुकर्रमा में मुज पर अेक पकत अैसा आया की में बीमार पण गया ओर मेरे पास न कोए तबीब था न कोए दवा थी, युनांचे में सूरह इतिहा के ऋीअे अपना एलाज करने लगा और उसकी अजुब तापीर पाए, में यह करता की आबे ऋमऋम से अेक घुंठ पानी लेता ओर उस पर सूरह इतिहा पण कर दम करता, फिर उसे पी लेता, एसीसे मुजे मुकम्मल तौर पर शिफा हासिल हो गए, फिर बहोत सी तकलीफ़ में एसी तरीके पर अमल करने लगा जिससे मुजे एन्तिहाए इएददा होता, एसके बअद जो शफ्स ली मुज से याअनी किसी बीमारी की शिकायत करता में उसे यही नुस्खा बता देता और उन में से बहोत से लोगों को जल्द शिफायाबी नसीब हो जाती.”

धरसी तरह सुन्नते नबपी से धाबित दम के ङररीअे धलाज करना ली झधद। देनेवाले धलाज में से हे, अगर दुआ कुबूल न होने के असबाब से जाली हो तो, अेसी दुआ मुसीबत दूर करने ओर मकसद तक पहुँचने के लिये मुझीद तरीन असबाब में से हे, बिल पुसूस उस वकत जब आहो-ङररी ओर आङिळी के साथ दुआ की जाअे।

दुआ मुसीबत व बला की दुश्मन हे, येह बला को दूर करती ओर उसका धलाज करती हे, बला नाञिल होने से रोकती हे या अगर बला नाञिल हो चुकी हो तो उसे हलका करती हे. (अल जवाबुल काझी, सझ २२ से २५)

जैसा की हदीथ में हे : “दुआ जो बला नाञिल हो चुकी हो उस में ली मुझीद हे ओर जो अली तक न नाञिल हुध हो उस में ली, लिहाजा अथ अल्लाह के बंदो ! तुम दुआ किया करो.” (तिरमिळी, हाकिम, अहमद, अल्बानीने धसे हसन कहा हे, देबिये सहीहुल जमिअ १५१/३, हदीथ ३४०३)

दुसरी हदीथ में हे : “तकदीर को सिई दुआ ही टाल सकती हे ओर उमर में सिई नेकी ही धजाझ कर सकती हे.” (हाकिम, तिरमिळी, अल्बानीने धसे हसन कहा हे, देबिये : सिलसिलतु अहादीधुष सहीहा, ७५-१, हदीथ-१५४)

लेकिन धस जगह अेक नुक्तो की तरङ्ग तपज्जोह जङ्गी हे, वोह येह कि कुरआनी आयात, अङ्कार, दुआअें ओर तअप्पुजात जिनके ङररीअे दम किया जाता हे ओर शिझ तलब की जाती हे येह पुद नझ देनेवाली ओर शिझ का ङररीआ हैं लेकीन अमल करनेवाले की कबूलीयत, ताकत व कुप्पत ओर ताषीर का ली उस में बहोत दभल हे, धस लिये अगर शिझयाबी में तारीज हो तो येह अमल करनेवाले की ताषीर की कमङोरी या जिस पर दम किया जा रहा हे उसकी अदमे कबूलीयत या उसका अंदाजा किसी अेसी झ्कापटवाली कुप्पत की वजह से हे जिसके साथ दुआ कारगर नहीं होती, क्युंकि दम के ङररीअे धलाज में दो चीञ्जों का पाया जाना ङङ्गी हे :

(१) अेक मरीळ की जानिब से (२) दुसरी धलाज करनेवाले की जानिब से.

मरीळ की जानिब से जिस चीळ का पाया जाना ङङ्गी हे वोह उसके नझस की ताकत, अल्लाह तआला की तरङ्ग सअ्थी तपज्जोह ओर उस पुप्ता अेअतिकाद से हासिल होती हे कि कुरआने करीम मोमिनो के लिये रहमत और शिझ हे.

सहीह दम वही हे जिस पर दिल् ओर ङबान दोनो हम आहंग हों, क्युंकि यह अेक किसम की जंग हे, ओर जंगजू अपने दुश्मन पर उसी सूरत में गल्बा पा सकता हे जब उसके अंदर दो चीञ्जों भोजूद हों : अेक तो उसका हथियार ठीक हो ओर उमदा हो, दुसरी यह कि उसका बाझू मळबूत हो, अगर धन दोनो में से अेक चीळ ली भोजूद न हो तो हथियार बहोत ङयादा झयदा नहीं दे सकता, झिर जब दोनो चीञ्जों भोजूद न हों तो क्या हाल होगा, यअनी उसका दिल् अल्लाह की तपहीद,

तपक्कुल, तक्पा ओर तपज्जोह से जाली हो ओर उसके पास हथियार ली न हो.

दूसरी चीज जिसका कुरआन व हदीथ के जरिये एलाज करनेवाले की जानिब से पाया जाना जरूरी है, येह है कि उसके अंदर ली भज्जुरा जाला दोनों चीजें मौजूद हों. (देभिअे : आदुल मआद २८-४, अल जवाबुलकाफी, सफ़ा ५१)

एसी लिअे एब्जुत तीन रहमतुल्लाहने कहा है :

“मुअप्पिआत ओर एनके अलापा अस्माअे एलाही के जरिये एम करना इहानी एलाज है, अगर येह नेक लोगों की ज्जबान से हो तो अल्लाह तआला के हुकम से शिफ़ा हासिल होगी.” (इतहुलबारी १८५/१०)

एलमा का एजमाअ है कि एम करना जाएज है अगर तीन शरतों के साथ किया जाअे.

(१) अल्लाह तआला के कलाम या उसके अस्माअ व सिफ़ात के जरिये या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से मनकूल कलाम व दुआ के जरिये एम किया जाअे.

(२) एम अरबी ज्जबान में हो, ओर अगर गैरअरबी ज्जबान में हो तो उसका मअना मअलूम हो.

(३) यह अेअतकाद रजा जाअे कि एम बजाते जुए अषर नहीं करता, बल्कि अल्लाह तआला की कुदरत से अषर अंदाज होता है. (देभिअे : इतहुलबारी १८५/१०, इतपा अल्लामा एब्ने बाज ३७४/२) एम महज अेक सभब है.

एसी अहमियत के पेशे नजर मेंने अपनी किताब (अज्जिक पद् दुआअ वल एलाज फिर इका मिनल् किताबि पस सुन्नति) में एम की किस्म को मुफ्तसर कर के येह किताब मुरत्तब की है ओर एस में कुछ एजाइें ली किअे हैं जो एन्शा अल्लाह मुईद षाबित होंगे. में अल्लाह अज्ज व जल्ल से उसके अस्माअे हुस्ना ओर सिफ़ाते आलिया के वसीले से दुआ करता हूं कि पोह एस अमल को अपने पजहे करीम के लिअे जालिस बनाअे, एससे जुए मुजे ली इाएद पहोंयाअे ओर एसे पण्हेनेवाले, छापनेवाले, एसकी एशाअत में हिस्सा लेनेवाले नीज तमाम मुसलमानों के लिअे मुईद बनाअे. (आमीन) बेशक अल्लाह सुब्हानहु एस अमल का सरपरस्त ओर एसकी कबूलीयत पर काटिर है.

रहमतुल्लाह का मुहताज

सएद बिन अली बिन पहइ अल कहतानी

तहरीर करदा : १४१४-५-१८, हीजरी

(१) ज़ादू का र्थलाज

ज़ादू के शरर्थ र्थलाज की ढो किरुमें हें :

पहली किरुम पोह अअमाल जिनके ञरीअे ज़ादू का अषर होने से पहले र्थस से अयाप किया जा सकता हे. र्थन में से अअज येह हें :

- (१) तमाम इराधज की अदाधगी, तमाम हराम चीजों से र्थजतिनाअ ओर तमाम अुराधर्यों से तौबा करना.
- (२) कुरआने करीम की अकषरत तिलापत करना, र्थस तरह की आढमी रोजाना कुरआने करीम के कुछ हिस्से की तिलापत अपने लिये अुतअ्यन कर ले.
- (३) मशरूअ अजकार व तअव्पुज्जात ओर दुआओं के ञरीअे अल्लाह से पनाह तलअ करे, जिन में से अअज येह हें :

सुअह व शाम तीन तीन अरतबा येह दुआ पण्हे.

अिरिअल्लाहिल्लही ला अरुरुरु अअरिअहि शरूँन इल् अररि वला इरुसअार्थ व हुपसअीउल् अलीम. (तिरअिअी, अबू ढावूढ, र्थन्ने अाजह)

तरजूअा : अल्लाह के नाम से, जिसके नाम के साथ ञमीन ओर आस्मान में कोध चीज नुकसान नहीं पहोंया सकती, ओर पोह सुननेपाला जाननेपाला हे.

हर इरु नमाज के अअढ, सोने के वकत ओर सुअह व शाम आचतुल कुरसी पण्हे. (हाकिम : पढर-१)

सुअह व शाम ओर सोने के वकत तीन तीन अरतबा (कुल हुवल्लाहु अहढ) ओर अुअव्पुज्जतैँ (कुल् अउीरु अि ररिअुल् इलक ओर कुल् अउीरु अि ररिअुन्नस) पण्हे.

रोजाना सो अरतबा येह दुआ पण्हे.

ला र्थला-ह र्थल्लल्लाहु वहढहु ला शरी-क लहु, लहुल् अुल्कु व लहुल् हअु, व हुप अला कुल्लि शररर्थन कढीर.” (अुजारी, अुरिलम)

तरजूअा : अल्लाह के सिवा कोध अअअूढे अरहक नहीं, पोह चकता हे, कोध उसका शरीक नहीं, सारी आढशाहत उसीकी हे ओर उसीके लिये हर किरुम की तअरीइ हे, ओर पोह हर चीज पर काढिर हे.

र्थसके अलावा सुअह व शाम की दुआओं, इरु नमाजों के अअढ के अजकार, सोने ओर जागने के अजकार, घर में ढाअिल होने ओर निकलने के अजकार, सवारी पर अेहने के अजकार, अरिजढ में ढाअिल होने ओर निकलने के अजकार अचतुलअला में ढाअिल होने ओर निकलने की दुआ, किसी अुसीअतजढ को ढेअ कर पण्हेने की दुआ ओर र्थसी तरह के ढिगर अजकार ओर दुआओं की पाअंढी

करे. मेंने धन अऊकार व दृआओं का अेक बना हिस्सा अपनी किताब (हिस्नुल मुस्लिम) में हालात व मुनासिबात ओर मकामात व अवकात की मुनासिबत से ँक कर दिया हे. ओर धस में कोध शक नहीं कि धन अऊकार ओर दृआओं की पाबंटी अल्लाह तआला के हुकम से नदु, नऊरेबद ओर जिन्नात से बनने का अेक सनब हे, ओर आइतों व मुसीबतों का शिकार हो जाने के बनद यही अऊकार व दृआओं धनका बेहतरीन धलाज भी हे. (ऊदुल मआद : १५२/४)

(४) मुमकिन हो तो सुबह निहारे मुंह सात नजूरें जाये, क्युंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का धर्शाद हे :

“जे शप्स सुबह के पकत सात अजवा नजूरें जा लेगा उसे उस दिन कोध ऊहर ओर नदू नुकसान नहीं पहोंया सकता” (जुआरी, मुस्लिम)

अऊल येह हे कि येह अजवा नजूरें मदीना तेय्यबा के दोनों ननिब पाये जानेवाली काली पथरीली ऊमीन के दरमियान (के नागात) की हों, जैसा कि सहीह मुस्लिम की रिवायत में हे, लेकिन हमारे शैभ अल्लामा अब्दुलअऊीऊ बिन अब्दुल्ला बिन नाऊ रहमतुल्लाह की राय येह हे कि मदीना की तमाम नजूरों मे येह नासीयत पाध जाती हे याहे अजवा न भी हों, **क्युंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का धर्शाद हे : “जिसने सुबह के पकत मदीना के दोनों ननिब पाये जानेवाली आग इलानेवाली पथरीली ऊमीन के दरमियान (के नागात) की सात नजूरें जा ली.... अल हदीथ (मुस्लिम १२१८)**

धसी तरह शैभ धब्ने नाऊ रहमतुल्ला का येह नयाल भी हे कि अगर किसीने मदीना तेय्यबा के अलापा किसी जगह की सात नजूरें पाध तो उसके लिये उस दिन के ऊहर ओर नदू से महकूऊ रहने की उम्मीद की जा सकती हे.

दूसरी किरम

नदू लगने के बनद उसका धलाज

धसके चंद तरीके हैं :

(१) पहला तरीका : येह हे कि अगर शरअन नधऊ अस्बाब व ऊराये से नदू की जगह मअलूम हो जाये तो उसको निकाल कर भतम कर दिया जाये, नदूऊदा शप्स के धलाज का येह अेक बनद ही कारगर तरीका हैं.

(२) दूसरा तरीका : शरध दम, बनऊ शरध दम येह हैं.

अलिइ : बेरी के सात हरे पत्ते लें ओर उन्हें दो पथरों या उसीके जैसी किसी ओर चीऊ के दरमियान रभ कर कुट लें, इर उस पर धतना पानी डालें जिस से गुस्ल किया जा सके ओर येह आयतों पणह कर दम करें :

અઊઝુ બિલ્લાહિ મિનશયતાનિર્ રજમ.

(૧) આયતુલ કુરસી (સુરહ બકરા : આયત નં. ૨૫૫)

બિસ્મિલ્લાહિર્ રહ્માનિર્ રહીમ્

અલ્લાહુ લા ઈલા-હ ઈલ્લા હૂ. અલ્ હય્યુલ્ કચ્યૂમ્ ૦ લા તઅખુઝુહૂ સિનતુવ્ પલા નવમ્ ૦ લહૂ મા ફિસ્સમાવાતિ વમા ફિલ્ અરઝૂ ૦ મન્ ઝલ્લઝી યશ્ફઉ ઈન્દહૂ ઈલ્લા બિ ઈઝ્નિહી યઅલમુ મા બય-ન અય્દીહિમ્ વમા ખલ્ફહુમ્ ૦ પલા યુહીત-ન બિ શય્ઈમ્ મિન્ ઈલ્મિહી ઈલ્લા બિમા શાઅ ૦ વસિ-અ કુર-સીય્યુહુસ્ સમાવાતિ વલ્ અરઝૂ ૦ પલા યઊદુહૂ હિફ-ઝુહુમા વ હુવલ્ અલીય્યુલ્ અઝીમ્ ૦ તરજુમા : અલ્લાહ હી મઅબૂદે બરહક હે જિસકે સિવા કોઈ મઅબૂદ નહીં, જો ઝિંદા ઓર સબ કો થામનેવાલા હે, જિસે ન ઊંઘ આએ ન નીંદ, ઉસીકી મિલકીયત મેં આસ્માનો ઓર ઝમીન કી તમામ ચીઝેં હે, કોન હે જો ઉસકી ઈજાઝત કે બગેર ઉસકે સામને શફાઅત કર સકે, વોહ જાનતા હે જો ઉંનકે સામને હે ઓર જો ઉંનકે પીછે હે, ઓર વોહ ઉસકે ઈલ્મ મેં સે કિસી ચીઝ કા ઈહાતા નહીં કર સકતે મગર જિતના વોહ યાહે, ઉસકી કુરસી કી વુસઅત ને આસ્માનો ઓર ઝમીન કો ઘેર રખા હે ઓર વોહ ઉંનકી હિફાઝત સે થકતા નહીં, ઓર વોહ બહોત બુલંદ ઓર બહોત બળા હે.

(૨) સૂરહ અઅરાફ કી આયત નં. ૧૧૭ સે ૧૨૨ તક.

બિસ્મિલ્લાહિર્ રહ્માનિર્ રહીમ્

વ અવ્હયના ઈલા મૂસા અન્ અલ્કિ અસાક ફ ઈઝા હિય તલ્કકુ મા યઅફ્ફિકુન ૦ ફ વકઅલ્ હક્કુ વ બતલ મા કાન્ યઅમલૂન ૦ ફ ગુલિબૂ હુનાલિ-ક વન્કલબૂ સાગિરીન ૦ વ ઉલ્કિયસ્ સહરતુ સાજિદીન ૦ કાલૂ આમન્ના બિ રબ્બિલ્ આલમીન ૦ રબ્બિ મૂસા વ હાઝન ૦

તરજુમા : ઓર હમને મૂસા અલેહિસ્સલામ કો હુકમ ટિયા કિ અપના અસા ડાલ દો, સો અસા કા ડાલના થા કિ ઉસને ઉંનકે સારે બને બનાએ ખેલ કો નિગલના શુરૂઅ કિયા. પસ હક ઝાહિર હો ગયા ઓર ઉંનહોને જો કુછ બનાયા થા સબ જાતા રહા. પસ વોહ લોગ ઉસ મોકે પર હાર ગએ ઓર ખૂબ ઝલીલ હો કર લોટે. ઓર જો સાહિર (જાદૂગર) થે સજદે મેં ગિર ગએ. કહને લગે કી હમ ઈમાન લાએ રબ્બુલ આલમીન પર. જો મૂસા ઓર હાઝન કા રબ હે.

(૩) સૂરહ યુનુસ આયત નં. ૭૯ થી ૮૨

બિસ્મિલ્લાહિર્ રહ્માનિર્ રહીમ્

વ કાલ ફિર્અવ્નુઅ-તૂની બિ ફુલિલ સાહિરિન અલીમ. ફ લમ્મા જાઅસ્ સહરતુ કાલ લહુમ્ મૂસા અલ્ફૂ મા અન્તુમ્ મુલ્કૂન ૦ ફ લમ્મા અલ્ફવ્ કાલ મૂસા મા જિઅતૂમ્ બિહિસ્ સિહરૂ ઈન્નલ્લાહ સયુબ્તિલુહુ ઈન્નલ્લાહ લા યુલિલહુ અમલલ્

मुझसिटीन ० व युहिककुल्लाहुल् हकक बि कलिमातिहि व लप् करिहल् मुजरिभून ०
तरजुमा : झिरओन ने कहा कि मेरे पास तमाम माहिर जादूगरों को हाकिर करो. झिर जब जादूगर आये तो मूसा अलैहिस्सलामने उनसे इरमाया कि डालो जो कुछ तुम डालनेवाले हो. सो जब उन्होंने डाला तो मूसा ने इरमाया कि यह जो कुछ तुम लाये हो जादू है, यकीनन अल्लाह उसको अली दरहम भरहम कर देगा, अल्लाह तआला इसादियों का काम बनने नहीं देता. ओर अल्लाह हकक को अपने इरमान से पाबित कर देता है गो मुजरिम केसा ही ना गवार समझे.

(४) सूरह ताहा आयत नं. ५५ से ७०

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम्

काल् या मूसा र्भमा अन् तुल्किय व र्भमा अन् नकून अप्पल मन् अल्का ० काल जल् अल्क इ र्भमा हिबालुहुम् व र्भसीय्युहुम् युभय्यलु र्भलय्हि मिन् सिहरिहिम् अन्नहा तस्आ ० इ अप्जस डी नइसिही जीइतम् मूसा. कुल्ना ला तजइ र्भन्नक अन्तल् अल्ला ० व अल्कि मा डी यमीनि-क तल्कइ मा सनउी, र्भन्नमा सनउी कयदु साहिर ० पला युइलिहुत्साहिइ हय्पु अता ० इ उल्कियस्सहरतु सुज्जदन काल् आमन्ना बि रब्बि हाइ-न व मूसा ०

तरजुमा : जादूगर कहने लगे कि अय मूसा ! या तो तु पहले डाल या हम पहले डालनेवाले बन जायें. मूसा ने जवाब दिया कि नहीं तुम ही पहले डालो (जब उन्होंने डाला) तो मूसा को यह भयाल गुजरने लगा कि उनकी रस्सीयां ओर लकड़ीयां उनके जादू के ओर से दौड लाग रही हैं. पस मूसा ने अपने दिल ही दिल में दर महसूस किया. हमने इरमाया कि कुछ जोड़ न कर, यकीनन तुही गालिब ओर भरतर रहेगा. ओर तेरे दाहिने हाथ में जो है उसे डाल दे कि उनकी तमाम कारीगरी को वोह निगल जाये, उन्होंने जो कुछ बनाया है येह सिई जादूगर के करतब हैं, ओर जादूगर कहीं से भी आये कामयाब नहीं होता. अब तो तमाम जादूगर सजदे में गिर पडे ओर पुकार उठे कि हम तो हाइन ओर मूसा के रब पर र्भमान लाये.

(५) सूरह काफ़ि़न

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम्.

कुल् या अय्युहल् काफ़ि़न् ० ला अअ्जुद् मा तअ्जुद्न ० पला अन्तुम् आबिद्-न मा अअ्जुद् ० पला अ-न आबिद्दुम् मा अबत्तुम् ० पला अन्तुम् आबिद्-न मा अअ्जुद् ० लकुम् दीनुकुम व लिय दीन् ०

तरजुमा : आप कह दिज्जे कि अय काफ़ि़रो ! न में र्भजाएत करता हुं उसकी जिसकी तुम र्भजाएत करते हो, ओर न तुम र्भजाएत करनेवाले हो उसकी जिसकी में र्भजाएत करता हुं. ओर न में र्भजाएत करूंगा उसकी जिसकी तुम र्भजाएत करते हो. ओर न

तुम ध्वात करोगे उसकी जिसकी में ध्वात कर रहा हूं. तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन हे ओर मेरे लिये मेरा दीन हे.

(५) सूरह ध्वात

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम्

कुल हुवल्लाहु अहद् ० अल्लाहुस् समद् ० लम् यलिद् व लम् यूलद् ० व लम् यकुल्लह् कुकुपन् अहद् ०

तरजुमा : आप कह दिज्जे कि वोह अल्लाह अक हे. अल्लाह बेनियाज हे, न उससे कोय पैदा हुवा ओर न वोह किसी से पैदा हुवा. ओर न कोय उसका हम सर हे.

(७) सूरह इलक

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम्

कुल् अउजु बि रब्बिल् इलक् ० मिन् शररि मा जलक् ० व मिन् शररि गासिदिन ध्वात पकब् ० व मिन् शररिन् नइझाधाति इल् उकद् ० व मिन् शररि हासिदिन् ध्वात हसद् ०

तरजुमा : आप कह दिज्जे कि में सुबह के रब की पनाह में आता हूं. हर उस चीज के शर से जिसको उसने पैदा किया हे. ओर अंधेरी रात की तारीकी के शर से जब उसका अंधेरा झैल जाये. ओर गिरह (गांठ) में झूकनेवालीयों के शर से, ओर हसद करने वाले की बुराई से जब वोह हसद करे.

(८) सूरह नास

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम्

कुल् अउजु बि रब्बिन्नास् ० मलिदिन्नास् ० ध्वातिन्नास् ० मिन् शररिल् पस्पासिल् जन्नास् ० अल्लाही युपस्फिसु इी सुदूरिन्नास् ० मिनल् जिन्नति पन्नास् ०

तरजुमा : आप कह दिज्जे कि में पनाह में आता हूं लोगों के रब की. लोगों के मालिक की. लोगों के मअबूद की. पसपसा डालनेवाले पीछे हट जानेवाले के शर से. जो लोगों के सीनों में पसपसा डालता हे. ज्वाह वोह जिन्नों में से हो या ध्वातानों में से.

मज्जूराला जाला आयात ओर सूरतों को पण्ह कर पानी पर दम करने के बअद मरीज उस पानी में से तीन बार थोडा थोडा पानी पी ले ओर बाकी पानी से गुस्ल कर ले, अल्लाहने याहा तो उससे मरज दूर हो जायेगा, ओर अगर यही अमल दोबारा या ध्वातसे ली ज्वादा बार करने की जरूरत पेश आये तो ऐसा करने में कोय हरज नहीं, यहां तक कि मरज का जात्मा हो जाये, ध्वात अमल का बार बार तरजुमा किया गया हे ओर ध्वातके जरिये अल्लाह तआलाने ज्वादा बज्शा हे, जिस

शप्स को ञद्दू पगेरह के ऋरिअे जीपी से सोहभत करने से रोक दिया गया हो तो यह अमल उसके लिये ली मुईद है. (इतापा धब्ने बाळ ५७८/३, इत्हुलबारी ५३३/१०)

(ज)

सूरह इतिहा, आयतुल कुरसी, सूरह बकरा की आभरी हो आयते, सूरह धब्लास और मुअप्पळतेन (सूरह इलक ओर सूरह नास) को तीन तीन बार या उससे ऋथादा बार पण्ह कर कूँके ओर तकलीफ़ की जगह पर दाहने हाथ को डेरें.

(१) सूरह इतिहा

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम्

अल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन ० अ-रहमानिर रहीम ० मालिकि यप्मिद् दीन ० धय्याक नअब्दु प धय्याक नस्तर्धन ० धह्दिनस् सिरातल् मुस्तकीम ० सिरातल्लळीन अन्अम्त अलयहिम ० गयरिल् मग्ज़ूबि अलयहिम पलज़् ऋल्लीन. ० (आमीन)

तरजुमा : सब तअरीक़े अल्लाह के लिये हे जे तमाम जहानों का पालनेवाला हे.

(१) जणा महेरबान निहायत रहमत करनेवाला हे. (२) जदले के दिन का मालिक हे.

(३) हम सिई तेरी ही धबादत करते हैं ओर सिई तुज ही से मदद चाहते हैं. (४)

हमें सीधी राह (रास्ता) दिया. (५) उन लोगों का रास्ता जिन पर तुने धन्आम

कीया हे. (६) उनकी (राह) नहीं जिन पर गळब (गुस्सा) कीया गया ओर न

गुमराहों की. (७)

(२) आयतुल कुरसी (सूरह बकरा आयत नं. २५५)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम्

अल्लाहु ला धला-ह धल्ला ह्. अल् हय्युल् कय्यूम ० ला तअब्जुहुह् सिनतुंप् पला

नप्म ० लह् मा डिस्समापाति पमा डिल् अर्ज़् ० मन् ऋल्लळी यश्डु धन्दह्

धल्ला बि धर्ज़्निही यअ्लमु मा जय्-न अय्दीहिम् पमा जल्डहुम् ० पला

युहीत्-न बि शय्धम् मिन् धल्मिही धल्ला बिमा शाअ् ० पसि-अ कुर-सीय्युहुस्

समापाति पल् अर्ज़् ० पला यउिदुह् हिह्-जुहुमा प हुपल् अलीय्युल् अळीम् ०

तरजुमा : अल्लाह ही मअजूदे बरहक हे जिसके सिपा कोध मअजूद नहीं, जे किंदा

ओर सब को थामनेवाला हे, जिसे न उिध आये न नीद, उसीकी मिलकीयत में

आस्मानों ओर ऋमीन की तमाम चीज़ें हैं, कोन हे जे उसकी ध्जळत के बगैर उसके

सामने शक्षयत कर सके, पोह जानता हे जे उनके सामने हे ओर जे उनके पीछे हे,

ओर पोह उसके धल्म में से किसी चीज़ का धहाता नहीं कर सकते मगर जितना पोह

चाहे, उसकी कुरसी की पुसअत ने आस्मानों और ऋमीन को घेर रखा हे ओर पोह

उनकी हिंसात्मकता से थकता नहीं, वोह बहोत जुलुंठ ओर बहोत जणा हे.

(3) सूरह बकरा की आज़री दो आयतों (नं. २८५, २८६)

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम्

आमनर् रसूलु बिमा उन्जि-ल एलयहि मिर् रब्बिही वल् मुअ्मिनून, कुल्लुन
आ-म-न बिल्लाहि व मलाएकतिही व कुतुबिही व इंसुलिही, ला नुर्हिर्कु जय्न्
अहदिम् मिर् इंसुलिही व काल् सभिअ्ना व अतअ्ना गुइरान-क रब्बना व
एलयकल् मसीर ० ला युक्लीकुल्लाहु नइसन एल्ला पुस्अहा लहा मा क-स-अत्
व अलयहा मक़्त-स-अत्, रब्बना ला तुआभिअ्ना एन् नसीना अप्
अप्तअ्ना, रब्बना वला तह्मिल् अलय्ना एस्रन कमा हमल्तहु अल्लेअ्नी-न
मिन् कपिलना, रब्बना वला तुहम्भिल्ना मा ला ताक-तलना बिही, वअकु
अन्ना, वहिर् लना, वरहम्ना, अन्त मप्लाना इन्सुरना अलल् कप्मिल्
काइरीन ०

तरजुमा : रसूल उस पर एमान लाये हे जे उनके रब की तरफ़ से नाज़िल किया हे.
ओर जे लोग येह रसूल के माननेवाले हैं, उन्होंने भी एसको दिल से कबूल कर लीया
हे. येह सब अल्लाह ओर उसके इरिशतों ओर उसकी किताबों ओर उसके रसूलों को
मानते हैं ओर वोह केहते हैं कि हम अल्लाह के रसूलों में इरक नहीं करते, हमने हुकम
सुना ओर उस पर अमल किया, (अय हमारे) मालिक, हम तेरे पास गुनाहों की
माफ़ी मांगते हैं ओर हमें तेरी तरफ़ ही पापस लौटना हे. अल्लाह कीसी भी एन्सान
के उपर उसकी ताकत से ज़यादा जिम्मेदारी का बोज़ नहीं डालता. हर एन्सानने जे
अरखे अअमाल कमाये हे, उसका जदला उसके लिअे हे ओर जे जराब काम जमा
किये हे उसका गुनाह उसके ही उपर हे. (एमानवालो ! तुम एस तरीके से दुआ करो)
अय हमारे रब ! हम से भूलचुक, कसूर हो तो उसके लिअे पकड न इरमा, मालिक,
हमारे उपर वोह बोज़ न डाल, जे तुने अगले लोगोंके उपर डाला था, परवरटिगार
! जे बोज़ उठाने की शकित हमारे में नहीं, वोह हमारे उपर न रज, हमारे साथ
नरमी रज, हमको दरगुजर इरमा, हमारे उपर रहम कर, तु हमारा मालिक हे, काइरीं
के मुकाबले में हमारी मदद कर.

(४) सूरह एन्नास

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम्

कुल हुपल्लाहु अहद् ० अल्लाहुस् समद् ० लम् यलिद् व लम् यूलद्. व लम्
यकुल्लह् कुकुपन् अहद् ०

तरजुमा : आप केह दिअे की वोह अल्लाह अेक हे. अल्लाह बेनियाज़ हे, न
उससे कोए पैदा हुवा ओर न वोह किसी से पैदा हुवा. ओर न कोए उसका हम सर

हे.

(प) सूरह इलक

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम्

कुल् अउिउु बि रठिबल इलक् ० मिन् शर्रि मा जलक् ० व मिन् शर्रि गासिकिन
धळा वकब् ० व मिन् शर्रिन् नइझाधाति इिल् उकड् ० व मिन् शर्रि हासिदिन्
धळा हसद ०

तरजुमा : आप कह दिउअे कि में सुजह के रज की पनाह में आता हुं. हर उस चीज
के शर से जिसको उसने पैदा किया हे. ओर अंधेरी रात की तारीकी के शर से जब
उसका अंधेरा झैल जाअे. ओर गिरह (गांठ) में झूकनेवालीयो के शर से, ओर हसद
करने वाले की बुराई से जब वोह हसद करे.

(ड) सूरह नास

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम्

कुल् अउिउु बि रठिबन्नास् ० मलिकिन्नास् ० धलाहिन्नास् ० मिन् शर्रिल्
वस्पासिल् जन्नास् ० अल्लाही युपस्पिसु इी सुदूरिन्नास् ० मिनल् जिन्नति
पन्नास् ०

तरजुमा : आप कह दिउअे कि में पनाह में आता हुं लोगो के रज की. लोगो के
मालिक की. लोगो के मअबूद की. पसपसा डालनेवाले पीछे हट जानेवाले के शर से.
जो लोगो के सीनो में पसपसा डालता हे. ज्वाह वोह जिन्नो में से हो या धन्सानो में
से.

(जम) जमेअ दुआअे, दम, ङाण ओर तठ्वुऊातः

(१) अरअलुल्लाहल् अळीम रठबल् अर्शिल् अळीमि अंय् यश्डीयक ०
(अबूदापूद १८७/३, तिरमिळी ४१०/५)

तरजुमा : में अळमतवाले अल्लाह से, जो अर्शे अळीम का मालिक हे, दुआ करता हुं
कि वोह तुम्हें शिझा अता करटे. (धस दुआको ७ बार पण्हे)

(२) अउिउु बिल्लाहि व कुदरतिहि मिन् शर्रि मा अजिदु व उहाऊिर ० (मुस्लिम
१७५८/४)

तरजुमा : में अल्लाह की ओर उसकी कुदरत की पनाह याहता हुं उस तकलीङ की
बुराई से जो में (अपने जिस्म में) पाता हुं ओर जिस से में डरता हुं.

मरीऊ अपने जिस्म में जहा तकलीङ महसूस करे वहां अपना दाहना हाथ
रज कर तीन बार “बिस्मिल्लाह” कहे, झिर सात भरतजा येह दुआ पण्हे.

(३) अल्लाहुम्म रठबन्नासि अळहबिल् बअस. वश्रि अन्तश्शाही ला शिझाअ
धल्ला शिझाउक शिझाअल् ला युगादिउ स-क-मा ० (बुजारी व मुस्लिम)

તરજુમા : અચ અલ્લાહ ! લોગોં કે રબ, બીમારી દૂર કર દે ઓર શિક્ષા દે દે, તુ હી શિક્ષા દેનેવાલા હે, તેરી શિક્ષા કે અલાવા કોઇ શિક્ષા નહીં, એસી શિક્ષા દે જો કોઇ બીમારી ન ધોળે.

(૪) અઊઝુ બિ કલિમાતિલ્લાહિત્તામ્માતિ મિન્ કુલિલ શય્તાનિવ્ વ હામ્મતિવ્ વ મિન કુલિલ અચનિલ્ લામ્મહ ૦ (બુખારી)

તરજુમા : મેં અલ્લાહ કે કામિલ કલિમાત કે ઝરીએ પનાહ યાહતા હું હર શયતાન ઓર હર ઝહરીલે જાનવર કે શર સે ઓર હર લગ જાને વાલી નઝર સે.

(૫) અઊઝુ બિ કલિમાતિલ્લાહિત્તમ્માતિ મિન્ શર્રિ મા ખ-લ-ક ૦ (મુસ્લિમ)

તરજુમા : મેં અલ્લાહ કે કામિલ કલિમાત કે ઝરીએ પનાહ યાહતા હું ઉસકી હર મખ્લૂક કી બુરાઇ સે.

(૬) અઊઝુ બિ કલિમાતિલ્લાહિત્તમ્માતિ મિન્ ગ-ઝ-બિહી વ ઇકાબિહી વ શર્રિ ઇબાદિહી વ મિન્ હ-મ-ઝાતિશ્શયાતીનિ વ અંચ્ યહ્ઝુરૂન ૦ (અબૂદાવૂદ, તિરમિઝી)

તરજુમા : મેં અલ્લાહ કે કામિલ કલિમાત કે ઝરીએ પનાહ યાહતા હું ઉસકે ગઝબ, ઉસકે ઇકાબ ઓર ઉસકે બંદોં કે શર સે, ઓર શયાતીન કે વસવસોં સે ઓર ઇસ બાત સે કિ વોહ મેરે પાસ આએ.

(૭) અઊઝુ બિ કલિમાતિલ્લાહિત્તમ્માતિલ્લતી લા યુજાપિઝુહુન્નુ બરૂંવ્ વ લા ફાજિરૂમ્ મિન્ શર્રિ મા ખ-લ-ક, વ બ-ર-અ વ ઝ-ર-અ, વ મિન્ શર્રિ મા યન્ઝિલુ મિનસ્સમાઇ, વ મિન્ શર્રિ મા યઅરૂજુ ફીહા, વ મિન્ શર્રિ મા ઝ-ર-અ ફિલ્ અરૂઝિ, વ મિન્ શર્રિ મા યખૂરૂજુ મિન્હા, વ મિન્ શર્રિ ફિતનિલ્લયલિ વન્નહારિ, વ મિન્ શર્રિ કુલિલ તારિકિન ઇલ્લા તારિકંચ્ યતરૂકુ બિ ખયરીચ્ યા રહમાન ૦ (મુસ્નદ અહમદ)

તરજુમા : મેં અલ્લાહ કે ઇન કામિલ કલિમાત કે ઝરીએ પનાહ યાહતા હું જિનસે કોઇ ભી નેક વ બદ તખાવુઝ નહીં કર સકતા, હર ઉસ ચીઝ કે શર સે જિસે ઉસને પેદા કિયા ઓર ફેલાયા, ઓર હર ઉસ ચીઝ કે શર સે જો આસમાન સે ઉતરતી હે ઓર હર ઉસ ચીઝ કે શર સે જો આસમાન મેં ચડતી હે, ઓર ઉસ ચીઝ કે શર સે જિસે ઉસને ઝમીન મેં ફેલાયા ઓર હર ઉસ ચીઝ કે શર સે જો ઝમીન સે નીકલતી હે, ઓર રાત ઓર દિન કે ફિત્નોં કે શર સે ઓર રાત કો હર આનેવાલે કે શર સે, સિવાએ ઉસ આનેવાલે કે જો ભલાઇ કે સાથ આએ, અચ મહેરબાની ફરમાનેવાલે.

(૮) અલ્લાહુમ્મ રબ્બસ્સમાવાતિસ્સબ્હ વ રબ્બલ્ અરશિલ્ અઝીમ, રબ્બના વ રબ્બ કુલિલ શય્ઈન, ફાલિકલ્ હબિબ વન્નવા, વ મુન્ઝલત્ તવ્રાતિ વલ્ ઇન્જિલિ વલ્ કુરઆનિ, અઊઝુ બિ-ક મિન્ શર્રિ કુલિલ શય્ઈન્ અન્ત આખિઝુમ્

ਭਿ ਨਾਸਿਯਤਿਹੀ, ਅਨ੍ਤਲ ਅਪ੍ਪਲੁ ਙ ਲਯ੍ਸ ਕਲ-ਕ ਸਯੁੰਨ, ਪ ਅਨ੍ਤਲ ਆਭਿੜ
 ਙ ਲਯ੍ਸ ਭਅਣ-ਕ ਸਯੁੰਨ, ਪ ਅਨ੍ਤਲ ਝਾਹਿੜ ਙ ਲਯ੍ਸ ਙ੍ਧ੍ਕ-ਕ ਸਯੁੰਨ, ਪ
 ਅਨ੍ਤਲ ਭਾਤਿਨੁ ਙ ਲਯ੍ਸ ਟਨ-ਕ ਸਯੁੰਨ ० (ਮੁਟਿਲਮ)

ਤਰਯੁਮਾ : ਅਯ ਅਲ੍ਲਾਹ ! ਸਾਤੋਂ ਆਸਮਾਨੋਂ ਕੇ ਰਭ, ਅਰ੍ਠੋ ਅਝੀਮ ਕੇ ਰਭ, ਹਮਾਰੇ ਓਰ
 ਹਰ ਚੀਝ ਕੇ ਰਭ, ਟਾਨੇ ਓਰ ਗੁਹਲੀ ਕੋ ਙਾਠਨੇਪਾਲੇ ਓਰ ਤੋਰਾਤ, ਈਞੁਲ ਓਰ
 ਕੁਰਆਨ ਕੋ ਨਾਝਿਲ ਕਰਨੇਪਾਲੇ, ਮੈਂ ਹਰ ਉਸ ਚੀਝ ਕੀ ਭੁਰਾਏ ਸੇ ਤੇਰੀ ਪਨਾਹ ਯਾਹਟਾ ਹੁੰ
 ਙਿਸਕੀ ਪੇਸ਼ਾਨੀ ਤੁ ਪਕਠੇ ਹੁਯੇ ਹੇ, ਤੁ ਈ ਅਪ੍ਪਲ ਹੇ ਤੁਯ ਸੇ ਪਹਲੇ ਕੋਏ ਚੀਝ ਨਹੀਂ,
 ਓਰ ਤੁ ਈ ਆਭਿਰ ਹੇ ਤੇਰੇ ਭਅਣ ਕੋਏ ਚੀਝ ਨਹੀਂ, ਓਰ ਤੁ ਈ ਝਾਹਿਰ ਹੇ ਤੇਰੇ ਉਪਰ ਕੋਏ
 ਚੀਝ ਨਹੀਂ, ਓਰ ਤੁ ਈ ਪੋਸ਼ਿਟਾ ਹੇ ਤੁਯ ਸੇ ਮਯਙੀ (ਓਰ ਕਰੀਭਤਰ) ਕੋਏ ਚੀਝ ਨਹੀਂ...

(੯) ਭਿਟਿਮਲ੍ਲਾਹਿ ਅਰਕੀ-ਕ ਭਿਨੁ ਕੁਟਿਲ ਸਯੁੰਯ ਯੁਅਝੀ-ਕ ਪ ਭਿਨੁ ਸਰ੍ਰਿ ਕੁਟਿਲ
 ਨਙ੍ਸਿਨੁ ਅਪ ਅਯਨਿਨੁ ਹਾਸਿਟਿਨੁ ਅਲ੍ਲਾਹੁ ਯਙ੍ਙੀ-ਕ ਭਿਟਿਮਲ੍ਲਾਹਿ ਅਰਕੀਕ ०
 (ਮੁਟਿਲਮ)

ਤਰਯੁਮਾ : ਮੈਂ ਅਲ੍ਲਾਹ ਕੇ ਨਾਮ ਕੇ ਸਾਥ ਤੁਮ੍ਹੈਂ ਟਮ ਕਰਟਾ ਹੁੰ ਹਰ ਉਸ ਚੀਝ ਸੇ ਯੋ ਤੁਮ੍ਹੈਂ
 ਤਕਲੀਙ ਟੇ ਰਹੀ ਹੇ, ਹਰ ਨਙ੍ਸ ਕੇ ਸਰ ਓਰ ਹਾਸਿਟ ਕੀ ਨਿਗਾਹ ਸੇ ਅਲ੍ਲਾਹ ਤੁਮ੍ਹੈਂ ਸਿਙਾ ਟੇ,
 ਮੈਂ ਅਲ੍ਲਾਹ ਕੇ ਨਾਮ ਕੇ ਸਾਥ ਤੁਮ੍ਹੈਂ ਟਮ ਕਰਟਾ ਹੁੰ.

(੧੦) ਭਿਟਿਮਲ੍ਲਾਹਿ ਯੁਠੀ-ਕ ਪ ਭਿਨੁ ਕੁਟਿਲ ਟਾਏਯ ਯਙਿਙ-ਕ ਪ ਭਿਨੁ ਸਰ੍ਰਿ
 ਹਾਸਿਟਿਨ ਏਝਾ ਹ-ਸ-ਟ ਪ ਭਿਨੁ ਸਰ੍ਰਿ ਕੁਟਿਲ ਝੀ ਅਯਨਿਨੁ ० (ਮੁਟਿਲਮ)

ਤਰਯੁਮਾ : ਅਲ੍ਲਾਹ ਕੇ ਨਾਮ ਸੇ, ਅਲ੍ਲਾਹ ਤੁਮ੍ਹੈਂ ਅਰਝਾ ਕਰੇ, ਓਰ ਹਰ ਭੀਮਾਰੀ ਸੇ ਤੁਮ੍ਹੈਂ
 ਸਿਙਾ ਟੇ, ਓਰ ਹਰ ਹਾਸਿਟ ਕੇ ਸਰ ਸੇ ਯਭ ਪੋਹ ਹਸਟ ਕਰਨੇ ਲਗੇ ਓਰ ਹਰ ਨਝਰੇ ਭਟਪਾਲੇ
 ਕੇ ਸਰ ਸੇ ਤੁਮ੍ਹੈਂ ਮਹਕੂਝ ਰਯੋ.

(੧੧) ਭਿਟਿਮਲ੍ਲਾਹਿ ਅਰਕੀ-ਕ ਭਿਨੁ ਕੁਟਿਲ ਸਯੁੰਯ ਯੁਅਝੀ-ਕ ਭਿਨੁ ਹ-ਸਟਿ
 ਹਾਸਿਟਿੰਪੁ ਪ ਭਿਨੁ ਕੁਟਿਲ ਝੀ ਅਯਨਿਨੁ ਅਲ੍ਲਾਹੁ ਯਙ੍ਙੀ-ਕ ० (ਸੁਨਨ ਏਞਨੇ ਮਾਯਹ)

ਤਰਯੁਮਾ : ਮੈਂ ਅਲ੍ਲਾਹ ਕੇ ਨਾਮ ਕੇ ਸਾਥ ਤੁਮ੍ਹੈਂ ਟਮ ਕਰਟਾ ਹੁੰ ਹਰ ਉਸ ਚੀਝ ਸੇ ਯੋ ਤੁਮ੍ਹੈਂ
 ਤਕਲੀਙ ਟੇ ਰਹੀ ਹੇ, ਹਾਸਿਟ ਕੇ ਹਸਟ ਸੇ ਓਰ ਹਰ ਨਝਰੇ ਭਟਪਾਲੇ ਕੇ ਸਰ ਸੇ ਅਲ੍ਲਾਹ ਤੁਮ੍ਹੈਂ
 ਸਿਙਾ ਟੇ.

ਏਠੀਂ ਤਅਪ੍ਪੁਝਾਤ ਓਰ ਟੁਆਓ ਓਰ ਟਮ ਕੇ ਝਰੀਏ ਯਾਟੁ, ਨਝਰੇਭਟ
 ਓਰ ਙਿਞਨਾਤ ਲਗਨੇ ਕਾ ਓਰ ਤਮਾਮ ਅਮਰਾਝ ਕਾ ਏਲਾਯ ਕਿਯਾ ਯਾਟਾ ਹੇ. ਕਯੁੰਕੀ
 ਯੇਹ ਯਮੇਅ ਓਰ ਭਹੁਕਮੇ ਏਲਾਹੀ ਨਙ੍ਅ ਭਯਸ਼ ਟਮ ਓਰ ਟੁਆਏਂ ਹੁੰ.

ਤੀਸਰੀ ਕਿਟਮ : ਙਿਸ ਯਗਹ ਯਾ ਙਿਟਮ ਕੇ ਙਿਸ ਹਿਟਸੇ ਮੈਂ ਯਾਟੂ ਕਾ ਅਧਰ ਝਾਹਿਰ ਹੋ
 ਅਗਰ ਭੁਮਕਿਨ ਹੋ ਤੋ ਸੁਏ ਲਗਾ ਕਰ ਪਹਾਂ ਸੇ ਯੂਨ ਨਿਕਾਲ ਟਿਯਾ ਯਾਏ, ਓਰ ਅਗਰ
 ਏਸਾ ਭੁਮਕਿਨ ਨ ਹੋ ਤੋ ਅਲਹਭੁਟਿਲ੍ਲਾਹ ਮਝਕੂਰਾ ਭਾਲਾ ਏਲਾਯ ਹੀ ਕਾਙੀ ਹੋਗਾ.

(ਝਾਟੁਲ ਮਆਟ ੧੨੫/ੜ)

योथी किरम : तबई द्दुआओं : कुछ मुझीद तबई द्दुआओं ली हैं जिन पर कुरआन करीम ओर सुन्नत मुतहहरा दलाएत करती हैं, ईन्सान अगर सच्चे दिल से यकीन ओर तपज्जोह, नीळ ईस ऐअतिकाद के साथ ईनको ईस्तिअमाल करे की झईद अल्लाह तआला की तरफ से होता हे तो ईन्शा अल्लाह ईन द्दुआओं से झईद होगा, ईसी तरह कुछ जडी बुटीयां वगेरह से बनी द्दुआओं ली हैं जे तजुर्बा पर मबनी होती हैं, येह द्दुआओं अगर हराम अज्जाअ पर मुस्तअमिल न हो तो ईन से झईद उठाने में शरई कोई इकावट नहीं. (तो ईनके करने में कोई हरज नहीं) (देजीअे : मुसन्निक् ईब्ने अबी शयबा ३८७, ३७५/७) (इतहुल हक सझ १३८)

तबई ओर बहुकम ईलाही मुझीद ईलाजे में (१) शहद (२) हब्बतुस सवदाअ (कलोज्ज) (३) आबे ज्जमज्ज (४) ओर आस्मान से नाजिल शुदा बारिश का पानी ली हे, क्युंकि अल्लाह तआला का ईर्शाद हे.

व नज्जलना मिनस्समाई माअम् मुबारकन ० (काइ : ८)

तरजुमा : ओर हमने आसमान से वा बरकत पानी उतारा.

ऐतुन का तेल ली मुझीद तबई ईलाज हे, क्युंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का ईर्शाद हे, “ऐतुन का तेल जाओ ओर उसकी मालिश करो, क्युंकि येह मुबारक दरख्त का तेल हे.” (अहमद, तिरमिझी)

नीळ तजुर्बा व ईस्तिमाल ओर मुतालिया किताब से येह बात सामने आती हे कि ऐतुन का तेल सब से बेहतर तेल हे. (इतहुलमुबीन, सझ १४२)

ईसी तरह गुसल करना, तहारत व सझई हासिल करना ओर जुशु लगाना ली तबई ईलाज में शामिल हे. (हवाला साबिक, सझ १४५)

(२) नजरे बंद का ईलाज

नजरे बंद के ईलाज की चंद किरमें हैं :

पहली किरम : नजर लगने से पहले उसका ईलाज :

ईसके चंद तरीके हैं :

(१) मशइअ तअप्पुजात, द्दुआओं ओर अज्कार के जरिअे अपना या जिस पर नजर लगने का दर हो उसका बचाव करना, जैसा कि जद्दू के ईलाज की पहली किरम में गुजर चुका हे.

(२) जिस शप्स को जुद अपनी नजर लग जाने का दर हो वोह जब अपनी जात में या अपने माल या अपनी अपलाद या अपने लाई या किसी ओर चीज के अंदर कोई अरखी चीज देजे तो उसे चाहिअे की वह बरकत कि द्दुआ करे ओर कहे:

माशा अल्लाहु, ला कुप्पत ईल्ला बिल्लाह, अल्लाहुम्म बारिक् अलय्ह ०

तरजुमा : जैसा अल्लाहने याहा (पैसा हुवा) अल्लाह की तोड़िक के बगेर कोई

તાકાત વ કુવ્વત નહીં, અચ અલ્લાહ ! ઇસે મઝીદ બરકત અતા કર. કયુંકી નબી કરીમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ કા ઇર્શાદિ હે, “જબ તુમ મેં સે કોઈ શખ્સ અપને ભાઈ કે અંદર કોઈ ઐસી ચીઝ દેખે જો ઉસે અચ્છી લગે તો ઉસકે લિઅે બરકત કી દુઆ કરે.” (મોઅત્તા ઇમામ માલિક ૯૩૮/૬, ઇબ્ને માજહ ૧૧૨૦/૬, અહમદ ૪૪૭/૪)

(૩) જિસ પર નઝરેબદ કા ડર હો ઉસકી ખૂબિયાં પોશિદા રખી જાએ. (શરહુલસના લિલબગવી ૧૧૨/૧૩)

દૂસરી કિસ્મ : નઝર લગને કે બઅદ ઉસકા ઇલાજ :

ઇસકે ભી ચંદ તરીકે હેં : (૧) જિસ શખ્સ કી નઝર લગી હો અગર ઉસકા પતા ચલ જાએ તો ઉસસે કહા જાએ કિ વોહ પુઝૂ કરે, ફિર ઉસકે પુઝૂ કે પાની સે નઝરઝદા શખ્સ ગુસ્લ કરે. (અબૂદાવૂદ ૯/૪)

(૨) સૂરહ ઇખ્લાસ, મુઅવ્વઝતેન (સૂરહ ફલક ઓર સૂરહ નાસ) સૂરહ ફાતિહા, આયતુલ કુરસી ઓર સૂરહ બકરહ કી આખરી દો આયતો ઓર દમ કે લિઅે વારિદ મશરૂઅ દુઆઓં કો બકષરત પળહ કર ફૂંકના ઓર જિસ જગહ તકલીફ હે ઉસ પર આયત પળહને કે દોરાન દાહને હાથ કો ફેરના, જેસા કિ જાદૂ કે ઇલાજ કી દૂસરી કિસ્મ કે હિસ્સા (જુમ) મેં નંબર ૧ તા ૧૧ કિ તહત ગુઝર ચુકા હે.

(૩) મઝફૂરા આયાત પળહ કર પાની પર દમ કિયા જાએ, ફિર મરીઝ ઉસ પાની મેં સે કુછ પાની પી લે ઓર બાકી પાની અપને ઉપર ડાલ લે. (અબૂદાવૂદ ૧૦/૪)

નબી સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમને ષાખિત બિન કેંસ રઝિચલ્લાહુ અન્હુ કે લિઅે ઐસા હી કિયા થા.) યા તેલ પર દમ કિયા જાએ ઓર મરીઝ ઇસકી માલિશ કર લે. (અહમદ ૪૯૭/૩)

ઓર અગર ઝમઝમકા પાની મિલ જાએ યા બારિશ કા પાની મોજૂદ હો તો ઇસ પર પળહ કર ફૂંક મારના ઝયાદા મુફીદ હે.

તીસરી કિસ્મ : ઉન કામોં કો કરના જિનકે ઝરીએ હાસિદ કી નઝર કો રફૂઅ કિયા જા સકતા હે, ઓર ચેહ દરજ ઝેલ હેં:

(૧) હાસિદ કે શર સે અલ્લાહ તઆલા કી પનાહ તલબ કરના.

(૨) અલ્લાહ સુબ્હાનહુ કા તકવા ઇખ્તિયાર કરના ઓર ઉસકે અમર વ નહી કી હિફાઝત કરના (જેસા કિ હદીષ મેં ઇર્શાદિ હે.)

“અલ્લાહ (કે અહકામ) કી હિફાઝત કરો વોહ અલ્લાહ તુમ્હારી હિફાઝત ફરમાએગા” (તિરમિઝી)

(૩) હાસિદ કી શારતોં પર સબર કરના ઓર ઉસે મુઆફ કર દેના, ચુનાંચે ન ઉસસે ઝગળે, ન ઉસકા શિકવા કરે ઓર ન હી અપને દિલ મેં ઉસકો અઝીયત દેને કે બારે મેં સોચે.

(४) अल्लाह तआला पर तपक्कुल करना, जो अल्लाह पर तपक्कुल करता है अल्लाह उसके लिये काफ़ी हो जाता है.

(५) हासिद का भौंड़ न करे ओर न ही उसके बारे में सोच को अपने दिल पर मुसल्लत करे, येह अेक बेहतरीन र्दलाज है.

(६) अल्लाह सुब्हानहु की तरफ़ मुतवज्जेह होना, उसके लिये अमल को जालिस करना ओर उसकी भुश्नुटी की ज़ुस्तजू करना.

(७) गुनाहों से तौबा करना, क्युंकि र्दन्सान के गुनाह ही उस पर दुश्मनों को मुसल्लत करने का ऋरीआ हैं. (इरमाने जारी तआला है.)

यमा असाबकुम् भिम् मुसीबतिन् इ बिमा कसबत् अय्दीकुम् व यय्दू अन् कषीर ० (अलशूरा : ३०)

तरजूमा : तुम्हें जो कुछ मुसीबतें पहींचती हैं वोह तुम्हारे अपने हाथों के करतुत का बदला है, ओर वोह तो बहोत सी बातों से दरगुज़र इरमा देता है.

(८) हसबे र्दस्तिताअत सदका ओर अेहसान करना, मुसीबत व बला, नज़रेबद ओर हासिद के शर के दफ़्अ करने में र्दसकी बणी अज्रब ताषीर है.

(९) अेहसान के ऋरीअे हासिद, ज़ालिम ओर मुज़ी र्दन्सान की हसद की आग को बुजाना, युनांचे जिस कदर आपके लिये कोर तकलीफ़ पहींचाने ओर जुल्म व हसद में बण्हे उस कदर आप उसके साथ अेहसान, ज़ैर ज़वाही ओर शक्कत व मुहब्बत बण्हा दें, लेकिन र्दसकी तोफ़्फ़ि सिर्ई उनही को मिलती है जिनका अल्लाह के यहां बणा नसीबा होता है.

(१०) अल्लाह अज़ीज़ व हकीम, जिसके हुकम के बग़ैर न कोर चीज़ नुकसान पहींचा सकती है न नफ़्अ दे सकती है, उसके लिये तोहीद को जालिस ओर पाक करना, तोहीद ही र्दन तमाम उमूर की जामेअ है ओर र्दसी तोहीद पर र्दन अस्बाब के इाएदा देने का दारोमदार है, क्युंकि तोहीद अल्लाह सुब्हानहु का वोह अज़ीम कलमा है कि उस में दाजिल होनेवाला मामून् व महकूज़ हो जाता है.

येह वोह दस अस्बाब हैं जिनके ऋरीअे हासिद के हसद को, नज़रे बद ओर जद्दुगर के शर को दूर किया जा सकता है. (बदाअेउल् इावएद, र्दब्नुल कथियम २३८ से २४५)

(३) र्दन्सान को जिन्न लग जाने का र्दलाज

जिस र्दन्सान को जिन्न लग जाअे ओर उसके अंदर दाजिल हो जाअे उसके र्दलाज की दो किस्में हैं :

पहली किस्म : जिन्न लगने से पहले उसका र्दलाज : जिन्नात से बयाप का अेक तरीका यह है कि तमाम इराएज़ वाजिबात की पाबंदी की जाअे, तमाम हराम कामों से र्दजतिनाब किया जाअे. तमाम बुराएचो से तौबा की जाअे ओर मशरूअ

अकार, दुआओं और तत्पुत्रात के ऋषि अपने आप को महकूळ रजा जाये।

दूसरी किस्म : जिन्न लगने बअद उसका धलाज : उसका तरीका यह है की वोह मुसलमान जिन् का दिल उसकी ऋजान से ओर जिन्नजटा शप्स के लिअे उसके दम से हमआहंग हो वोह मरीज पर पणह कर डूके, सब से बणा धलाज येह है कि सूरह झतिहा, आयतुल कुरसी, सूरह बकरा की आभरी दो आयतों, सूरह धज्लास, सूरहे झलक ओर सूरह नास पणह कर मरीज पर डूक दिया जाये, यह अमल तीन बार या उससे ऋयादा बार किया जाये, धनके अलावा दूसरी कुरआनी आयात भी पणही जा सकती है। क्युंकि पूरा का पूरा कुरआन दिलों की बीमारीयों के लिअे धलाज ओर मोमिन के लिअे शिझा, हिदायत ओर रहमत है। (इतहुल बारी, मुस्नद धमाम अहमद)

धनके अलावा दम की दुआओं भी पणही जायें, जैसा कि जादू के धलाज की दूसरी किस्म के हिस्सा (बा) और हिस्सा (जुम) में मजकूर है।

धस धलाज में दो चीजों का पाया जाना ऋरी है : पहली चीज का तत्पलुक मरीज से है, ऋरी है कि उसके अंदर कुप्यते नइस, अल्लाह की तरफ सखी तपज्जोह ओर ऐसी सहीह पनाह तलबी पाध जाये जिस पर दिल ओर ऋजान दोनों मुतकिह हों, ओर दूसरी चीज का तत्पलुक मुआलिज (धलाज करनेवाले) से है, यअनी उसके अंदर भी धन्ही अपसाइ का पाया जाना ऋरी है। क्युंकि हथियार की ताकत उसके चलानेवाले की ताकत पर मुनहसिर है। (पिकायतुल धन्सान भिनल जिन्न व शयतान)

अगर मरीज के कान में अजान केह दी जाये तो यह भी अरछा है, क्युंकि शयतान अजान की आवाज से दुर भागता है। (बुजारी)

(४) नइसीयाती अमराज का धलाज

नइसीयाती अमराज ओर दिल की बेयेनी का सबसे बणा धलाज मुप्तसरन दरज जेल है :

(१) हिदायत ओर तोहीद, धसके बरअकस गुमराही ओर शिर्क बेयेनी के अरबाब में से है।

(२) धमाने सादिक का नूर जिसे अल्लाह तआला बंटे के दिल में डालता है ओर उसके साथ ही नेक अमल।

(३) धल्मे नाइिअ, बंटे का धल्म जिस कदर ऋयादा पसीअ होता है धसके दिल को उसी कदर ऋयादा पुशी ओर कुशादगी नसीब होती है।

(४) अल्लाह सुपहानहु की तरफ इज्जत ओर तोबा, पूरे दिल के साथ उससे मोहब्बत करना, उसकी तरफ मुतपज्जो होना ओर उसकी धबादत से लुत्फ हासिल करना।

(प) हर हाल में ओर हर जगह ठिकरे धलाही की पाबंटी करना, क्युंकि टिल के सुकून, टिल की भूशी ओर रंज-गम दूर करने में ठिके धलाही की बणी अजुब तापीर होती हे.

(द) भण्डू के साथ हर तरह का हुस्ने सुलूक ओर उन्हे हर मुमकिन झधटा पहोयाना, क्युंकि करम नपाळ ओर अहेसान करनेवाले का सीना सब से ळयाटा पसीअ, नइस सब से ळयाटा पाकीळा ओर टिल सब से ळयाटा मुतमधन होता हे.

(७) शुभअत व बहादूरी, क्युंकि बहादूर का सीना जाली ओर टिल पसीअ होता हे.

(८) टिल की तंगी ओर अजाब की भोजिब तमाम भुरी सिझात भषलन भुगळ व हसट, कीना व इरेब, अटापत व दुश्मनी ओर जुल्म व ळयाटती की टिल से निकाल बाहर करना, **सहीह हदीष से धाभित हे की नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से अइळल तरीन शप्स के बारे में दरयाइत किया गया तो आपने इरभाया, “हर पाक साइ टिल ओर सरथी ळबानवाला,” सहाबाने अर्क किया कि सरथी ळबानवाला तो हम जानते हैं, येह पाक साइ टिल वाला कौन हे ? आपने इरभाया, “वोह मुत्तकी ओर साइ सुथरा धन्सान जिस में गुनाह, जुल्म व ळयाटती, कीना व इरेब ओर हसट न पाया जाये.” (धब्ने माजह)**

(९) गैर ळर्री नऊर, कुजुल गुइतगू करना या सुनना, गैर ळर्री धफिललाइत, ळयाटा जाना ओर ळयाटा सोना धोण देना, क्युंकि धन गैर ळर्री चीळों का धोण देना टिली सुकून, धतमिनाने कल्ब ओर रंज व गम को दूर करने के अस्बाब में से हे.

(१०) किसी मुझीट अमल या नइा बण्श धल्म से वाबस्ता रहना, क्युंकि येह वाबस्तगी रंज-गम में मुबतिला करनेवाली चीळों को टिल से भुला देती हे.

(११) आज के भोजूटा काम का अहेतिमाम करना ओर आधन्टा पेश आनेवाले काम के अहेतिमाम से ओर माळी के गम से मुनकतअ हो जाना, क्युंकि बंटा दीन ओर दुन्या के लिअे मुझीट कामों मे कोशिश व भहेनत करता हे ओर अपने मकसट में कामियाबी के लिअे अपने रब से दुआ करता ओर मधट याहता हे, ओर येह चीळ रंज व गम से तस्सली का बाधष बनती हे.

(१२) रिळक, भूशाहाली ओर धनके मुतअटिलक टिगर उमूर में अपने से कमतर शप्स की तरइ देजना, अपने से आला शप्स की तरइ न देजना.

(१३) धन्सान पर जे नापसंटीटा हालात गुऊर युके हैं ओर जिनकी तलाइी ना मुमकिन हे उन्हे भुला देना ओर उनके बारे में सोचने से ली दूर रेहना.

(१४) बंटे पर अगर कोध मुसीबत आये तो उस पर वाधिब हे कि उसे दूर करने की कोशिश करे, धस तरह कि उस बटरीन नतीजे का तसप्पुर करे जहां तक

मुआमला पहुँच सकता है, फिर अपनी ताकत के मुताबिक उसे दूर करने की कोशिश करे.

(१५) दिल को मजबूत रखे, बेकरार न हो, बुरे अइकार को दखल देनेवाले वहम व भयालात से मुतअब्धिर न हो, गुस्सा न हो, पसंदीदा हालात के जातमे से ओर नापसंदीदा हालात के पेश आने से ज़ोइर न हो, बल्कि मुआमला अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के सुपुर्द कर दे, साथ ही नज़ा बय्या असबाब व रास्ते इस्तिअमाल में लाये ओर अल्लाह से माई व दरगुज़र ओर आइयत का सवाल करे.

(१६) अल्लाह सुब्हानहु व तआला पर दिल से अहतमाद ओर लरोसा करना ओर उससे अच्छी उम्मीद रखना, क्युंकि अल्लाह पर लरोसा करनेवाले शय्स पर वहम व अइकार अघर अंदाज़ नहीं हो सकते.

(१७) अकलमंद शय्स येह जानता है कि सहीह मअनों में ख़िंदगी वही है जो सआदत ओर इतमीनान की ख़िंदगी हो ओर वोह येह ली जानता है कि ख़िंदगी बणी मुप्तसर है, इस लिये वह रंज व गम ओर तलभीयों की नज़र करके उसे मज़ीद मुप्तसर नहीं करता, क्युंकि येह सआदतमंदाना ख़िंदगी के मनाई है.

(१८) बंदे को जब कोई मुसीबत पेश आये तो वोह अपने पास मौजूद हिगर दीनी या दुन्यवी नेअमतों के दरमियान ओर आइ हुइ मुसीबत के दरमियान मुवाज़ना (सरजामली) करे, इससे उसे उन बेशुमार नेअमतों का अंदाज़ा हो जायेगा जिन में वोह सांस ले रहा है, इसी तरह वोह अपने बारे में जिस नुकसान के वाकअ होने से डरता है उसके दरमियान ओर सलामती के बहोत से इमकानात के दरमियान मुकारना (सरजामली) करे ओर अक कमज़रो से अंदेशे को बहोत से कपी इमकानात पर गालिब न आने दे, इससे उसका गम ओर ज़ोइर हो जायेगा.

(१९) बंदा येह जानता है कि लोगों की इज़ा रसानी भास तौर से गंदी बातों के ज़रीअे लोगों से पहुँचनेवाली तकलीईं उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकती, बल्कि येह ज़ुइ उनहीं के लिये नुकसान देह है, इस लिये उनकी तकलीईं देनेवाली बातों पर तव्वजोह न दे ताकि वोह उसे नुकसान न पहुँचा सकें.

(२०) बंदा अपने अइकार उन कामों में इस्तिअमाल करे जो उसके दीन ओर दुन्या दोनों के लिये मुईद हों.

(२१) बंदा अपने अहसान ओर ललाइ का बदला सिई अल्लाह तआला से तलब करे ओर येह यकीन रखे कि उसका येह मुआमला अल्लाह के साथ है, लिहाज़ा जिसके साथ अहसान किया है उसकी तरइ से शुकरिया की परवाह न करे.

इन्नमा नुतइमुकुम् लि वज्हिल्लाहि ला नुरीदु भिनुकुम् जज़ाअं वला शुक्रा ०
(सूरह इन्सान-९)

तरजूमा : हम तो तुम्हें सिई अल्लाह की रज़ामंदी के लिये जिलाते हैं, न तुम से

अदला चाहते हैं न शुक्र गुजारी.

अहल व अयाल ओर अवलाह के साथ सुलूक करने में येह पहलू मज्जीद झर्री हो जाता हे.

(२२) नझा बभ्श उमूर को सामने रभना ओर धनके हुसूल के लिअे महेनत करना, नीळ नुकसानदेनेवाले कामों पर तवज्जो न देना ओर झहन व झिकर को उन में उल्जाने से बचना.

(२३) जिस वकत का जो काम हो उसे उसी वकत अंजाम देना ओर मुस्तकबिल के लिअे झारिग हो जाना, ताकि मुस्तकबिल के कामों को झिक व अमल की कुव्वत से अंजाम दे सके.

(२४) नझा बभ्श अअमाल ओर मुझीद उलूम में से हसबे तरतीब पहले अहम तरीन बिल जुसूस मरगूब अअमाल व उलूम को धभितयार करे ओर उनके बारे में अल्लाह से मदद तलब करे ओर झिर लोगों से मशवरा तलब करे, ओर जब उन कामों में झार्घटे का यकीन हो जाअे ओर वोह उन्हें करने का पुभ्ता धरादा कर ले तो अल्लाह पर भरोसा करते हुअे काम शुझअ कर दे.

(२५) अल्लाह की झाहिर ओर पोशिदा नेअमतों को बयान करना, कयुंकि नेअमतों के पहचानने ओर उनके बयान करने से अल्लाह तआला रंज व गम दूर करता हे ओर यही चीळ बंटे को शुक्र गुजारी पर उभारती हे.

(२६) बीवी, कराबतदार, ओर हर वोह शभ्स जिससे आपका कोध तअल्लुक हो जब उसके अंदर कोध अेब पाअे तो उससे मुआमला करते वकत उसकी धिगर भूबीयों को सामने रभे ओर उनका उस अेब से मुवाळना करें, धससे रझाकत ओर दोस्ती बरकरार रहेगी ओर धिल को धतमीनान हासिल होगा.

रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलअहि व सल्लम का धर्शाद हे : “कोध भोभिन भर्द अपनी बीवी से जुळ न रभे, अगर वोह उसकी बअळ आदात से नाभूश हे तो उसके धिगर अजलाक उसे भूश कर देंगे.” (मुस्लिम)

(२७) तमाम मुआमलात की बहेतरी की अल्लाह तआला से दूआ करे ओर धस सिलसिले की सल से अझीम दूआ येह हे :

अल्लाहुम्म अरिलह ली दीनीयल्लझी हु-व धरमतु अम-री, व अरिलह ली दुन्यायल्लती झीहा मआशी, व अरिलह ली आभिरतीयल्लती झीहा मआदी, वज-अलिल् हया-त झियादतल् ली झी कुल्लि बय-र. वज-अलिल् भय-त राहतल ली भिन कुल्लि शर-र ० (मुस्लिम : ४०/१७)

तरभुमा : अय अल्लाह मेरा दीन संवार दे के यही मेरी असल पूंज हे, ओर मेरी दुनिया बना दे के धस में मुझे झिन्दगी गुजारनी हे, ओर मेरी आभिरत संवार दे जहां मुझे लौट कर जाना हे, ओर अय अल्लाह झिन्दगी को मेरे लिअे हर भलाध के कमाने

का ऋरीआ ओर मौत को मेरे लिये हर बुराई से बचने का ऋरीआ (वसीला) बना।
नीळ येह हुआ : अल्लाहुम्म रहमत-क अर्जु इला तकिल्नी एला नइसी तर्इ-त
 अन्नीप् व अस्लिह ली शअ्नी कुल्लहु, ला एलाह एल्ला अन्त ० (अब्दुएपूद,
 अहमद)

तरजुमा : अय अल्लाह ! में तेरी ही रहमत का उम्मीदवार हूँ, पस मुझे पलक
 ऋपकने के बराबर ली मेरे नइस के हवाले न कर, ओर मेरे तमाम मुआमलात को
 संवार दे, तेरे सिवा कोई मअबूटे बरहक नहीं।

**(२८) अल्लाह की राह में जेहाद करना, क्युंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व
 सल्लम का एर्शाद हे, “अल्लाह की राह में जेहाद करो, क्युंकि अल्लाह की राह में
 जेहाद जन्नत के दरवाजों में से एक दरवाजा हे, एसके ऋरीअे अल्लाह रंज व
 गम से नजात देता हे.” (अहमद, हाकिम)**

जो शप्स एन अस्बाब व पसाएल पर गौर करे ओर सिदक व एफ्लास के
 साथ उन पर अमल करे एसके लिये येह नइसियाती अमराज के लिये ओर रंज व
 एजतिराब के लिये मुईद ओर बेहतरीन एलाज हे, बअज उलमाने एनके ऋरीअे
 बहोत से नइसीयाती अमराज ओर परेशानीयों का एलाज किया हे ओर अल्लाह
 तआलाने उनके ऋरीअे बहोत इएदए बप्शा हे।

(५) झोले और ऋफ्त का एलाज

जब किसी एन्सान को कोई तकलीफ होती या उसे झोला या ऋफ्त होता तो
 रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम अपनी उंगली से एस तरह करते हदीष
 के रापी सुइयानने अपनी शहादत की उंगली ऋमीन पर रपी ओर फिर उठा ली
 ओर येह हुआ पण्ही, **बिस्मिल्लाहि, तुर्बतु अर्इना बि री-कति बअ्इना,
 युशइा सकीमुना बि एर्इनि रबिबना ० (बुभारी, मुस्लिम)**

तरजुमा : अल्लाह के नाम के साथ, येह हमारी ऋमीन की मिट्टी हे हम में से बअज
 के लुआब के साथ, हमारे रब के हुकम से हमारा मरीज अरछा हो जायेगा।

हदीष का मतलब यह हे कि दम करनेवाला अपनी शहादत की उंगली पर
 अपना लुआब लगा कर उसे ऋमीन पर रजे ताकि एस पर कुछ मिट्टी थिपक जाये,
 फिर ऋफ्त या तकलीफ की जगह पर उसे डेरे ओर मजकूरा हुआ पण्हे। (मुस्लिम,
 इतहलबारी, ऋदुलमआद)

(६) मुसीबत व परेशानी का एलाज

**१) मा असाब भिम् मुसीबतिन इिल् अर्इ वला इी अनकुसिकुम् एल्ला इी
 किताभिम् भिन् कबिल अन् नब्रअहा एन्न ऋलि-क अलल्लाहि यसीर ० लि क्य
 ला तअ्सप् अला मा इातकुम् वला तइरह् बिमा आताकुम् वल्लाहु ला युहिब्बु**

कुल्ल मुफ्तालिन इफ्तर (सूरतुल हदीद : २२, २३)

तरजुमा : न कोई मुसीबत दुनिया में आती है न जास तुम्हारी जानों में, मगर ईससे पहले कि हम उसको पेदा करें वोह अेक जास किताब में लिखी हुई है, येह काम अल्लाह पर बिलकुल आसान है. ताकि तुम अपने हाथ से निकल जानेवाली किसी चीज़ पर रंजुदा न हो जाया करो ओर न अता करदा चीज़ पर ईतरा जाओ, ओर ईतरानेवाले शैभीजोरों को अल्लाह पसंद नहीं इरमाता.

२) मा असा-ब भिम्मुसीबतिन एल्ला बिईज़्जिल्लाहि व मंय् युअ्मिम् बिल्लाहि यह्दि कल्बह. वल्लाहु बिकुत्तिल शय्ईन अलीम ० (अत्तगाबुन : ११)

तरजुमा : कोई मुसीबत अल्लाह की ईजाज़त के बगैर नहीं पहुँच सकती, ओर जो अल्लाह पर ईमान लाअे अल्लाह उसके दिल को हिदायत देता है, ओर अल्लाह हर चीज़ को पूज जाननेवाला है.

३) जिस बंटे को कोई मुसीबत पहुँचे ओर वोह येह दुआ पण्ह ले, “ईन्नालिल्लाही व ईन्ना ईलय्हि राजिउिन, अल्लाहुम्म अज़्ज़नी ई मुसीबती व अज़्ज़ि ली जय्रम् मिन्हा ०”

तरजुमा : हम सब अल्लाह ही के लिअे हैं ओर हम सब उसीकी तरफ़ लोट कर जानेवाले हैं, अय अल्लाह ! मुजे मेरी मुसीबत का अजर दे ओर मुजे उसका बेहतरीन नदला अता इरमा.

तो अल्लाह तआला उस शप्स को मुसीबत का अजर ली देता है ओर उसे उसका बेहतरीन नदला अता इरमाता है. (मुस्लिम)

४) जब किसीका लडका झौत होता है तो अल्लाह तआला अपने इरीशतों से इरमाता है: तुमने मेरे बंटे के लडके को कब्ज़ कर लिया? वोह जवाब देते हैं : हां. अल्लाह इरमाता है: तुमने उसके दिल के टूकडे को छिन लिया? वोह जवाब देते हैं: हां. अल्लाह इरमाता है: किर मेरे बंटे ने क्या कहा? इरिशते जवाब देते हैं: उसने तेरी तअरीफ़ की ओर “ईन्ना लिल्लाह.....” पण्हा. अल्लाह इरमाता है मेरे बंटे के लिअे जन्नत में अेक घर बनावो ओर उसका नाम “बयतुल् हम्द” रण दो. (तिरमिज़ी)

५) अल्लाह तआला इरमाता है : “जब मैं अपने मोमिन बंटे से दुन्या में उसके किसी अज़ीज़ को छीन लूं ओर वोह मुज से अजर की उम्मीद रण कर सबर कर ले, तो मेरे पास उसका ईन्आम सिई जन्नत है.” (बुजारी)

६) अेक आदमी का बर्या झौत हो गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलय्हि व सल्लमने इरमाया : “क्या तुम नहीं चाहते कि जब तुम जन्नत के दरवाज़ों में से

किसी दरवाजे पर आओ तो उसे अपने घन्तकार में जणा पाओ?"

(अहमद, निसाई, इतहुलबारी)

७) अल्लाह अज़्ज व जल्ल इरमाता हे : "जब में अपने बंटे की दोनों आंघे छिन कर उसे आज़माई ओर वोह उस पर सबर कर ले (ओर मुज से षवाब की उम्मीद रणे) तो में उसके बदले उसे जन्नत अता कड़ंगा." (बुजारी, तिरमिज़ी)

८) जिस मुसलमान को ली किसी बीमारी से या किसी दुसरे ञरिअे से कोई तकलीफ़ पहुँचती हे तो अल्लाह तआला उस तकलीफ़ के बाईष ईस तरह उसके गुनाह जण (माइ कर) देता हे जिस तरह दरफ्त अपने पत्ते जण (गिरा) देता हे." (बुजारी, मुस्लिम)

९) "किसी मुसलमान को अगर कांटा ली खूँलता हे या उससे बण्ह कर कोई तकलीफ़ लाहिक होती हे तो उसके बदले उसके लिअे अेक नेकी लिखी जाती हे और अेक गुनाह मुआइ कर दिया जाता हे." (मुस्लिम)

१०) "मोमिन को जे ली दाईमी तकलीफ़, परेशानी, बीमारी या रंज लाहिक होता हे यहाँ तक कि उसे जे गम पहुँचता हे उसके ञरीअे उसके गुनाह मुआइ होते हे." (मुस्लिम)

११) "जिस कदर आज़माईश सप्त होगी उसी कदर अजर व षवाब ली ञयादा होगा, ओर जब अल्लाह तआला कुछ लोगों से मोहब्बत करता हे तो उन्हें आज़माईश में डालता हे, अब जे आज़माईश पर राञी रहे उसके लिअे अल्लाह की तरफ़ से रज़ामंडी हे, और जे जञअ इञअ करे उसके लिअे अल्लाह की तरफ़ से नाराञगी हे." (तिरमिज़ी)

१२) "बंटे के साथ मुसीबत लगी रहती हे यहाँ तक कि उसे ईस हाल में ञमीन पर चलता छोणती हे कि उसके उपर कोई गुनाह बाकी नहीं रहता." (तिरमिज़ी)

(७) रंज व गम का ईलाज

१) जिस बंटे को कोई रंज व गम लाहिक हो ओर वोह येह दुआ पणहले : "अल्लाहुम्म ईन्नी अब्दु-क, ईब्नु अब्दि-क, ईब्नु अ-मति-क, नासियती बि यदि-क, माञिन् इय्य हुक्मु-क अद्लुन इय्य कज़ाई-क अस्अलु-क बिकुल्लिस्मिन् हु-व ल-क सम्मय्त बिही नइस-क अप् अन्जल्-तह् ई किताबि-क अप् अल्लम्-तह् अ-हदम् मिन् जल्कि-क अपिस्तअ्धर्-त बिही ई ईल्मिन् गयदि ईन्-क अन् तज्अलल् कुरआ-न रबी-अ कल्बी व न्-र सद्री व जलाअ हुञ्नी व ञहा-ब हम्मी ० (अहमद)

तरजुमा : अय अल्लाह ! में तेरा बंदा हूं, तेरे बंटे का बेटा हूं, तेरी बंटी का बेटा हूं, मेरी पेशानी तेरे हाथ में है, मेरे बारे में तेरा हुकम नाकिञ्च है, मेरे बारे में तेरा क़ैसला इन्साफ़ पर मबनी है, मैं तुज से तेरे हर उस नाम के वसीले से सवाल करता हूं जिसे तुने जुद को मौसूफ़ किया है, या उसे अपनी किताब में नाज़िल इरमाया है, या अपनी मज़्लूक में से किसी को सिभलाया है, या अपने पास इल्मे ग़ैब मे उसे अपने लिअे भास कर रभा है, कि तु कुरआने करीम को मेरे दिल की बहार, मेरे सीने का नूर और मेरे रंज व गम और पेशानीयों के भातमे का ञरीआ बना दे।
अल्लाह तआला उसके रंज व गम को दूर कर देता है और उसके बदले उसे ज़ुशी व मसरत अता इरमाता है।

२) अल्लाहुम्भ इन्नी अउिउु बि-क भिनल् हभिम वल् ह-उ-नि वल् अज्जि वल् कसलि, वल् जुफ़िल वल् जुफ़िन वउ-ल-इद् दय्नि व ग-ल-बतिर् रिजाल ० (बुजारी)

तरजुमा : अय अल्लाह ! में तेरी पनाह याहता हूं रंज और गम से, आज़िज़ी और काहिली से, ओर बजीली से ओर जुज़दिली से, कर्ज़ के बोज़ से ओर लोगों के गल्बे से।

(८) कर्न (पेशानी) व नेयेनी का इलाज

१) ला इला-ह इल्लल्लाहुल् अज़ीमुल् हलीमु, ला इला-ह इल्लल्लाहु रब्बुल् अर्शिल् अज़ीमि ला इला-ह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति व रब्बुल् अर्रि व रब्बुल् अर्शिल् करीम ० (बुजारी, मुस्लिम)

तरजुमा : अल्लाह के सिवा कोय़ मअबूटे बरहक नहीं जो अज़मतवाला ओर जुर्दबार है, अल्लाह के सिवा कोय़ मअबूटे बरहक नहीं जो अर्शे अज़ीम का रब है, अल्लाह के सिवा कोय़ मअबूटे बरहक नहीं जो आस्मानों का रब, ज़मीन का रब ओर अर्शे करीम का रब है।

२) अल्लाहुम्भ रहम-त-क अर्रू इला तकिलनी इला नइसी तर्र-त अय्निंप् व अरिलह ली शअ्नी कुल्लहू ला इला-ह इल्ला अन्त ० (अबूदायूद, अहमद)

तरजुमा : अय अल्लाह ! में तेरी ही रहमत का उम्मीदवार हूं, पस मुजे पलक उफ़कने के बराबर ली मेरे नइस के हवाले न कर, ओर मेरे तमाम मुआमलात को संवार दे, तेरे सिवा कोय़ मअबूटे बरहक नहीं।

३) ला इला-ह इल्ला अन्त सुब्हान-क इन्नी कुन्तु भिनज़ालिमीन ० (तिरमिज़ी)

तरजुमा : तेरे सिवा कोय़ मअबूटे बरहक नहीं, तु पाक है, बेशक में ज़ालिमों में से था।

४) अल्लाहु अल्लाहु रब्बी ला उश्रिक्कु बिही शय्आ ० (अबूदायूद)

तरजुमा : अल्लाह, अल्लाह ही मेरा रब है, मैं उसके साथ किसी भी चीज़ को शरीक नहीं ठेहराता।

(८) मरीज़ का जुद अपना ईलाज करना

जिस्म से जिस जगह तकलीफ़ हो वहां अपना हाथ रभे ओर तीन बार

“बिस्मिल्लाह” ओर सात भरतबा येह दुआ पण्हे :

“अउजु बिस्माहि व कुदरतिहि मिन् शर्रि मा अजिदु व उहाजिउ ०”

(मुस्लिम)

तरजुमा : मैं अल्लाह की ओर उसकी कुदरत की पनाह याहता हूं उस तकलीफ़ की बुराई से जो मैं पाता हूं ओर जिस से मैं डरता हूं।

(१०) मरीज़ की ईयादत को ज़ाये तो क्या पठे

जो भी मुसलमान बंदा किसी ऐसे मरीज़ की ईयादत को ज़ाये जिस की मौत का पकत न आया हो ओर सात भरतबा ये दुआ पण्हे तो उस मरीज़ को शिफ़ा हासिल हो जाती है :

अरअलुल्लाहल् अज़ीम रब्बल् अर्शिल् अज़ीमि अय् यश्कियक ० (तिरमिज़ी, अबूदायूद)

तरजुमा : मैं अज़मतवाले अल्लाह से, जो अर्शे अज़ीम का रब है, सवाल करता हूं की वोह तुम्हें शिफ़ा अता इरमा टे।

(११) नींद की हालत में ग़ायाहट ओर जेयेनी का ईलाज

अउजु बि कलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन् ग-ऊ-बिही व ईकाबिही व शर्रि ईबादिही व मिन् हमजातिशशयातीनि व अय् यहजुइन ० (अबूदायूद, तिरमिज़ी)

तरजुमा : मैं अल्लाह के कामिल कलिमात के ऋरीये पनाह याहता हूं उसके गज़ब ओर उसके ईकाब ओर उसके बंदों के शर से, ओर शयातीन के वसवसो से ओर ईस बात से कि वोह मेरे पास आये।

(१२) बुजार का ईलाज

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का ईशाद हे : “बुजार जहन्नम की गरमी से होता है, लिहाज़ा उसे पानी के ऋरीये ठंडा करो。” (बुजारी, मुस्लिम)

(१३) डसने और डंभ मारने का ईलाज

१) सूरह इतिहा पण्ही ज़ाये ओर थुक जमा करके डंभ की जगह पर थुंका ज़ाये। (बुजारी)

२) सूरह काफ़ि़न ओर मुअप्पळलेन (सूरह इलक ओर सूरह नास) पण्ही ज़ाये

ओर पानी ओर नमक से डंभ की जगह पोंछी जाये. (तिबराणी, मजमूअ
उवाएड)

(१४) गुस्से का इलाज

गुस्से के इलाज के दो तरीके हैं : पहला तरीका : गुस्से से बचना : येह चीज गुस्से
के अस्बाब से इजतिनाब के ऋरीये हासिल हो सकती है, गुस्से के बअज अस्बाब
येह हैं : तकब्बुर, जुएपसंटी, इभ्र, बुरी लालय, बे मौके का मजाक, ओर ठहा हंसी
पगेरह.

दुसरा तरीका : गुस्सा आने के बअए उसका इलाज : उसके चार तरीके हैं : (१)
मरदूए शयतान से अल्लाह की पनाह तलब करना अउजु बिल्लाहि
मिनशशयतानिर् रज्जुम ० पणहना. (२) पुजू करना (३) जिसे गुस्सा आया हो वोह
अपनी हालत बटल ले, यअनी बेठ जाये, या लेट जाये, या जिस जगह हे वहां से
हट जाये, या बोलने से रुक जाये, या उस जैसी कोइ ओर सूरत इफ्तीयार कर ले.
(४) गुस्सा पी जाने का जो अजर व षवाब हे ओर गुस्से का जो बुरा अंजाम
बयान किया गया हे उसका तसप्पुर करे.

(१५) हब्बतुस सवदा (कलोन्ज) से इलाज

रसूलुल्लाह अल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का इशाई हे : “हब्बतुस सवदा
(कलोन्ज) में हर बीमारी के लिअे शिफा हे सिवाये साम के”

इब्ने शिहाब कहते हैं : साम से मौत मुराए हे ओर हब्बतुस सवदा (कलोन्ज)
को कहते हैं. (बुजारी, मुस्लिम)

कलोन्ज में बेशुमार इवाएड हैं. : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम का
इशाई हे : “हर बीमारी के लिअे शिफा हे” इस की मिषाल अल्लाह तआला के इस
इशाई की हे :

तुदभिम् इल्ल शय्दम् बिअम्रि रब्बिहा ० (अल अहकाइ : २५)

तरजुमा : वोह अपने रब के हुकम से हर चीज को हलाक कर देगी. यअनी हर वोह
चीज जो हलाकत कबूल करनेवाली हो. ओर इसी तरह की टिगर आयत. (आदुल
मआए)

(१६) शहद से इलाज

१) अल्लाह अज्ज व जल्लने शहद की मज्जी का ठिक करते हुअे इरमाया :
यज्जु मिम् जुतानिहा शराबुम् मुफ्तलिडुन अल्वानुह् डीहि शिफाउल् लिन्नासि
इब्न डी आलि-क लआयतल् लि इप्मिन् यतइक्कइन् ० (अन् नहल : ५९)
तरजुमा : इन के पेट से रंग बेरंग का मशरूब निकलता हे जिस में लोगो के लिअे
शिफा हे, गौर व किंकर करनेवालों के लिअे इस में ली बहोत बणी निशानी हे.

२) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया : “शिझा तीन चीजों में हे : पछना लगवाने में या शहद पीने में या आग से टागने में, लेकिन में अपनी उम्मत को टागने के अमल से मना करता हूं.” (जुबारी)

(१७) आने उमउम से र्दलाज

(१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने आने उमउम के बारे में इरमाया : “येह बाबरकत पानी हे, येह जाने का जाना हे ओर बीमारी से शिझा ली.” (मुस्लिम, बयहडी, तिबरानी)

(२) जबिर रजियल्लाहु अन्हु की मरकूअ हदीष हे, “उमउम का पानी हर उस मकसद के लिअे हे जिसके लिअे पीया जाये.” (इब्ने माजह)

(३) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम (यमणे के बरतनों ओर) मशक में उमउम भर कर ले जाते ओर मरीजों के उपर डालते ओर उन्हें पीलाते थे.” (तिरमिझी, बयहडी)

इमाम इब्नुलकथियम रहमतुल्लाह इरमाते हैं, “मैंने ओर मेरे अलापा दूसरोंने ली आने उमउम से र्दलाज के बारे में अजुब अजुब उमूर का तजुर्बा किया हे, मैं ने बहोत से अमराज से शिझायाजी के लिअे इसे कइ बार इस्तेमाल किया हे ओर अल्लाह के हुकम से मुजे शिझा हासिल हुइ हे.” (जादुल मआद)

(१८) टिल की बीमारीयों का र्दलाज

टिल तीन किरम के होते हैं :

(१) कल्ने सलीम (पाक टिल) : ओर यही पोह टिल हे जिसके बगैर कयामत के टिन बंटे को नजात नहीं मिलेगी, अल्लाह तआलाने इरमाया :

यप्म ला यन्डुँ मालुंप् पला बनून. र्दला मन् अतल्लाह बि कल्बन् सलीम ०
(अश शुअरा : ८८ से ८९)

तरजुमा : जिस टिन माल ओर अपलाट कुछ काम न आरेंगे, लेकीन (इइएटिपाला पोही होगा) जो अल्लाह तआला के सामने कल्ने सलीम ले कर हाजिर हो.

कल्ने सलीम वह हे जो अल्लाह के अन्न प नही की मुजालिइ हर प्वाहिश से ओर अल्लाह की बताइ हुइ चीजों के बारे में हर शक से मुहकूज हो, युनांचे, पोह गैरुल्लाह की बंदगी से महकूज हो ओर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के अलापा किसी ओर को इंसल मानने से महकूज हो. जुलासा ये के पाक ओर सहीह टिल पोह हे जो किसी ली पहलू से गैरुल्लाह की शिरकत से पाक हो, बल्कि र्दला, मोहब्बत, तपककुल, र्दनाबत, आजिझी, जशियत ओर उम्मीट हर अेअतबार से उसकी र्दनाबत प बंदगी अल्लाह के लिअे जालिस हो, ओर उसका अमल ली अल्लाह ही के लिअे जालिस हो, युनांचे पोह अगर किसी से मोहब्बत करे तो

अल्लाह के लिये करे, जुगल रहे तो अल्लाह के लिये रहे, किसीको दे तो अल्लाह के लिये दे ओर किसी से हाथ रोके तो अल्लाह के लिये रोके, गरज येह के उसका हर मकसद अल्लाह के लिये हो, उसकी सारी मोहब्बत अल्लाह के लिये हो, उसका धरादा अल्लाह के लिये हो, उसका खिस्म अल्लाह के लिये हों, उसके अअमाल अल्लाह के लिये हों ओर उसका सोना ओर जागना सब कुछ अल्लाह के लिये हो, धसी तरह अल्लाह का कलाम ओर अल्लाह के बारे में गुस्तगू उसके नजदीक हर गुस्तगू से बण्हकर भरगूब हो, ओर अल्लाह की भरजी ओर पसंदगी के काम ही उसकी सोच ओर फ़िक्र का भरकज हो. (धगाघतुल लहज़ान भिन मसाधदिश शायतान, धमाम धब्नुल करियम रहमतुल्लाह)

२) **मुर्दा दिल :** येह कल्ले सलीम के उल्टा हे, ओर येह वोह दिल हे जो न अपने रब को पेहचानता हे ओर न उसके हुकम ओर उसकी मोहब्बत व पसंदगी के अअमाल के ळरीअे उसकी धताअत व बंदगी करता हे, बल्कि अपनी ज्वाहिशात व लज़्जात के पीछे पणा होता हे, अगर ये उस में अल्लाह की नाराज़गी ओर गैज़ व गज़ब शामिल हो, लिहाज़ा वोह मोहब्बत, उम्मीद व भौड़, रज़ामंटी व नाराज़गी ओर तहज़ीब व धन्कसारी हर पहलू से गैज़ल्लाह की बंदगी करता हे, युनांचे वोह अगर किसी से जुगल रहता हे तो अपने नइस के लिये रहता हे, अगर मोहब्बत करता हे तो अपने नइस के लिये करता हे, अगर किसीको देता हे तो अपने नइस के लिये देता हे ओर अगर अपना हाथ रोकता हे तो अपने नइस के लिये रोकता हे, गरज कि नइस ही उसका धमाम, ज्वाहिश उसका काधद, जहालत उसकी रेहनुमा ओर गइलत उसकी सवारी होती हे. ऐसे मुर्दा दिल से हम अल्लाह की पनाह याहते हैं.

३) **बीमार दिल :** येह ऐसा दिल हे जिसमे जीदगी तो हे लेकिन उस में बीमारी ली हे, यअनी उस में (जिंदगी ओर बीमारी के) दो भावे होते हैं, कली पहला भावा उसे अपनी तरफ़ र्थिता हे ओर कली दुसरा भावा, फिर दोनों भावों में से जो ली भावा उस पर गालिब आ जाता हे दिल उसीका हो जाता हे. उस दिल के अंदर अल्लाह तआला की मोहब्बत, अल्लाह पर धमान, अल्लाह के लिये धज्वास ओर अल्लाह पर तपककुल का पहलू भोजूद होता हे जो उसकी जीदगी का भावा हे, ओर उसके अंदर ज्वाहिशात की मोहब्बत ओर उसके हुसूल की ज्वाहिश, हसद, तकब्बुर, भुदपसंदी, रियासत व सरदारी के ळरीअे ळमीन पर इसाद इलाता हे. निझक, रियाकारी ओर बजील व कंजूसी का पहलू ली भोजूद होता हे जो उसकी हलाकत व बरबादी का भावा हे. (धगाघतुल लहज़ान) हम ऐसे दिल से ली अल्लाह की पनाह याहते हैं.

कुरआन करीम में दिल की तमाम बीमारियों का धलाज भोजूद हे, अल्लाह तआला का

अमले सालेह ओर मसनून दुआओं ओर पठाईई से हासिल होती हे.

(बा) नुकसान देनेवाली चीजों से परहेज, ओर उसकी शकल येह हे कि हर किस्म की नाइरमानी ओर शरीअत के जिलाइपरजी से ईजतिनाब किया जाये.

(जम) हर तकलीई देनेवाली चीज से छूटकारा हासिल करना, ओर येह तौबा प ईस्तगइर के ळरीये हो सकता हे.

3) दल पर नइस के गालल आने की बीमारी का ईलाज:

ईस ईलाज के दो तरीके हैं : (१) नइस का मुहासबा (२) नइस की मुजाललइत, इर मुहासबा की ली दो कलमें हैं अलीई : पह कलम जिसका तअल्लुक अमल अंजाम देने के पहले से हे, ओर उसके चार मुकामात हैं. :

१. क्या येह अमल उसके बस का हे?

२. क्या उस अमल का अंजाम देना उसके ललये तई कर देनेसे बेहेतर हे?

३. क्या उस अमल से अल्लाह की भूशनुदी मकसूद हे?

४. अगर वोह अमल तआपुन तलब हे तो क्या वोह उस पर तआपुन ले सकता हे ओर क्या उसके कुछ मददगार प अन्सार हैं जो उसकी मदद कर सकते हैं? अगर उसका मुषबत जपाब भोजूद हे तो ईकदाम करे, परना हरगल उसका ईकदाम न करे.

(बा) वोह कलम जिसका तअल्लुक अमल अंजाम देने के बअद से हे, ओर उसकी तीन सूरेतें हैं :

१) अल्लाह तआला के हुकूक के बारे में नइस का मुहासबा करना जिस में उससे कोताही सरउद हुई हे ओर उसका हक नहीं अदा किया हे, अल्लाह तआला के बअज हुकूक येह हैं : ईजलास, जेर ज्वाही, ईततबाअ, मकामे अहेसान का मुशाहिदा, अल्लाह के इल प अहेसान का मुशाहिदा, ओर उन सबके बअद जुद अपनी कोताही का मुशाहिदा करना.

२) हर उस अमल पर नइस का मुहासबा करना जिसको छोण देना उसके अंजाम देने से बेहेतर था.

३) उस जाईज काम पर नइस का मुहासबा करना जिसे उसने नहीं किया, ओर क्या उस काम से उसका मकसद अल्लाह की भूशनुदी ओर दारे आभरत था या उससे दुन्या मकसूद थी, युनांचे पहली सूरेत में उसे कामियाबी मिलेगी ओर दूसरी सूरेत में वोह जसारे में दो चार होगा.

गुइतगू का जुलासा येह हे कि बंदा सब से पहले इराईज की अदाईगी पर अपने नइस का मुहासबा करे, अगर उसमें कमी हे तो उसको पुरा करे, उसके बअद अल्लाह की मना की हुई चीजों पर अपने नइस का मुहासबा करे, अगर उसे यह पता चल जाये की उसने बअज मनहियात का ईरतकाब किया हे तो तौबा प

ઇસ્તગફાર કે ઝરીએ ઉસકી તલાફી કરે, ફિર ઉન અઅમાલ પર નફ્સ કા મુહાસબા કરે જો ઉસકે અઅઝાઅ વ જવારેહને અંજામ દિએ હૈ, ઓર ફિર ગફલત પર નફ્સ કા મુહાસિબા કરે. (ઇગાષતુલ લહફાન)

જ) દિલ પર શયતાન કે તસલ્લુત કી બીમારી કા ઇલાજ : શયતાન ઇન્સાન કા દુશ્મન હે, ઓર અલ્લાહ કે મશરૂઅ કરદા ઇસ્તઆઝા (પનાહ તલબી) કે ઝરીએ ઉસસે છૂટકારા હાસિલ કિયા જા સકતા હે, નબી કરીમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમને નફ્સ કે શર સે ઓર શયતાન કે શર સે પનાહ તલબી કો એક સાથ ઝિફ્ફ કિયા હે, યુનાંચે આપને અબુ બકર સિદ્દીક રઝિયલ્લાહુ અન્હુ સે ફરમાયા : કહો “**અલ્લાહુમ ફાતિરસમાવાતિ વલ્ અરઝિ, આલિમલ્ ગય્બિ વશહાદતિ, રબ્બ કુલ્લિ શય્ઈન્ વ મલીકહુ, અશહદુ અલ્લા ઇલા-હ ઇલ્લા અન્ત, અઊઝુ બિ-ક મિન્ શર્રિ નફ્સી, વ મિન્ શર્રિશ્ શય્તાનિ વ શિરકિહિ, વ અન્ અફ્તરિક અલા નફ્સી સૂઅન્ અવ્ અજુરરુહુ ઇલા મુસ્લિમ ૦”** (તિરમિઝી, અબૂદાવૂદ)

તરજુમા : અય અલ્લાહ ! આસ્માનો ઓર ઝમીન કો પેદા કરનેવાલે, ગાઇબ ઓર હાઝિર કો જાનનેવાલે, હર ચીઝ કે રબ ઓર માલિક, મેં શહાદત દેતા હું કિ તેરે સિવા કોઇ મઅબૂદે બરહક નહીં, મેં અપને નફ્સ કે શર સે ઓર શયતાન કે શર ઓર ઉસકે શરીક સે તેરી પનાહ યાહતા હું, ઓર ઇસ બાત સે ભી કિ અપને નફ્સ કે સાથ કોઇ બુરાઇ કરૂં યા કિસી મુસલમાન કો કોઇ તકલીફ પહોંચાઉં.

નબી કરીમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમને ફરમાયા: “જબ સુબહ કરો ઓર જબ શામ કરો ઓર જબ બિસ્તર પર જાઓ તો ચેહ દુઆ પઘ્હ લિયા કરો.”

(તિરમિઝી, અબૂદાવૂદ)

ઇસ્તઆઝા, તવકકુલ ઓર ઇખ્લાસ ચેહ સબ શયતાન કે તસલ્લુત વ ગલબે કી રાહ મેં રૂકાવટ હે. (ઇગાષતુલ લહફાન)

વ સલ્લલ્લાહુ વ સલ્લમ અલા અબ્દિહિ વ રસૂલિહિ મુહમ્મદિવ્ વ અલા આલિહિ વ અરહાબિહિ અજ્મઇન વ મન્ તબિઅહુમ્ બિ ઇહ્સાનિન્ ઇલા ચવ્મિદ્દીન.

અપીલ

અલ્હમ્દુલીલ્લાહ, ઇસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-ભુજની સ્થાપના ૨૦૧૨ ના વર્ષમાં થઇ હતી. તેનો હેતુ અલ્લાહના દીનથી અજાણ લોકો સુધી ઇસ્લામનો સંદેશ પહોંચાડવાનો છે. સંસ્થા દીનની દાવત માટે જે કંઇ કરી રહી છે તેની માહિતી આપ સૌ સુધી પુસ્તકોના માધ્યમથી પહોંચતી રહી છે. આપ જાણો છો કે દીની સાહિત્ય છપાવવા માટે વિશેષ આયોજન અને નાણાકીય ભંડોળની જરૂર રહે છે. આ સંદર્ભમાં આપને તન-મન અને ઘનથી સંસ્થાને સહકાર આપવાની નમ્ર અપીલ કરીએ છીએ.

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ દ્વારા પ્રકાશિત પુસ્તકો

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	લેખક
૦૧	સિરતુન્નબી (સ.અ.વ.) કિવઝ	અબુ વસીમ અ.રહીમ મુહમ્મદી
૦૨	ગુનાહે કબીરા	ઇમામ શમ્સુદ્દીન ઝહબી (રહ.)
૦૩	દુઆએ	મો. શાહીદ જામઇ 'રાજકોટી'
૦૪	સ્ત્રીઓના વિશિષ્ટ મસાઇલ	શૈખ સાલેહ અલ ફઉઝાન
૦૫	મીલાદુન્નબી અને મોહબ્બતે રસુલ (સ.અ.વ.)	ડો. ફઝલૂર્હમાન મદની
૦૬	સીરતે નબવી અને ગેરઇસ્લામી વિચારો	મો. અબુલઆસ વહીદી
૦૭	નમાઝ ની સઝાવટ	મો. મુહમ્મદ ઇસ્માઇલ સામરોદી
૦૮	યા અલ્લાહ મદદ	હાફીઝ સલાહુદ્દીન યુસુફ
૦૯	અહમ દીની અસ્બાક	શૈખ અ.અઝીઝ બિન અબ્દુલ્લાહ બિન બાઝ
૧૦	રોઝાના મસાઇલ	મો. મુહમ્મદ ઇકબાલ કીલાની
૧૧	ઝકાતના મસાઇલ	મો. મુહમ્મદ ઇકબાલ કીલાની
૧૨	હજજ અને ઉમરાહના મસાઇલ	મો. મુહમ્મદ ઇકબાલ કીલાની
૧૩	ફઝાઇલે કુર્આન મજીદ (સંક્ષિપ્ત)	મો. મુહમ્મદ ઇકબાલ કીલાની
૧૪	મુસલમાન કા અકીદા	શૈખ મુહમ્મદ બિન જમીલ ઝૈનુ
૧૫	શૈતાન કા ઇન્ટરવ્યુ	મુહસીન હિજાજી
૧૬	તફસીર સૂર: બકરહ	હાફીઝ સલાહુદ્દીન યુસુફ
૧૭	કલમાએ તોહીદ કા મઅના...	મુહમ્મદ ઉમેર ટૉકી
૧૮	તોહફા એ રમઝાન	અબ્દુર્હમાન ખિલજી
૧૯	દીન કે તીન અહમ ઉસુલ	શૈખુલ ઇસ્લામ મુહમ્મદ અત્તમીમી
૨૦	એહલે સુન્નત વલ જમાઅત કા અકીદા	શૈખ મુહમ્મદ બિન સાલેહ અલ ઉષેમીન
૨૧	નેક ઔરત	આહ્યા દઅવત કમીટી, નડીયાદ.
૨૨	નબી (સ.અ.વ.) કી નમાઝ	શૈખ અબ્દુલ અઝીઝ બિન અબ્દુલ્લાહ બિન બાઝ રહ.
૨૩	સૂર: યાસીન	મતન ઔર તર્જુમા